सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखा संगम

22वाँ अंक
जुलाई – दिसंबर 2023

कार्यालय महालेखाकार लेखा एवं हकदारी–प्रथम
कार्यालय महालेखाकार लेखा एवं हकदारी–द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज
कार्यालय अंतर्राष्ट्रीय सूचना पद्धति एवं लेखापरीक्षा केंद्र
नोएडा, उत्तर प्रदेश

राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका
'लेखा संगम' के 21वें अंक
का विमोचन

हिंदी पखवाड़ा 2023 के समापन
समारोह के अवसर पर
महालेखाकार महोदय
संबोधन देते हुए

हिंदी पखवाड़ा 2023 के समापन
समारोह के दौरान
माननीय गृह मंत्री जी का
राजभाषा संबधी संदेश का
वाचन करते हुए
उप महालेखाकार / प्रशासन महोदय

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिंदी पत्रिका

लेखा संगम

जुलाई 2023 से दिसंबर 2023

कार्यालय

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

अंतर्राष्ट्रीय सूचना पद्धति एवं लेखापरीक्षा केंद्र, नोयडा, उत्तर प्रदेश

लेखा संगम परिवार

संरक्षक

श्री अभिषेक सिंह
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

डॉ. सुरेंद्र कुमार
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

परामर्शदाता

श्री शैलेश कुमार अग्रवाल
वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन
(लेखा एवं हकदारी)-प्रथम

सुश्री साहिल सांगवान
उप महालेखाकार/प्रशासन
(लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय

संपादक

सुश्री साधना राय
हिंदी अधिकारी
(लेखा एवं हकदारी)-प्रथम

सह-संपादक

सुश्री शिप्रा सिंह
हिंदी अधिकारी
(लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय

सहायक संपादक

श्री अमीन अली
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
(लेखा एवं हकदारी)-प्रथम

सहयोग

श्री प्रभात रंजन
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
(लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय

श्री प्रशांत कुमार सिंह
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
(लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय

मूल्य: निःशुल्क (राजभाषा हिंदी को समर्पित)
कुल पृष्ठ :

(नोट: लेखकीय विचारों से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	जब धूप बिछाए फूल बिछौना	श्री यश मालवीय पर्यवेक्षक (सेवानिवृत्त)/लेखा-प्रथम	9
2.	अपना इतिहास जानें	श्री राघवेंद्र सिंह वरिष्ठ लेखाधिकारी/लेखा-प्रथम	13
3.	श्री अन्न	सुश्री साधना राय हिंदी अधिकारी/लेखा-प्रथम	16
4.	रिस्टार्ट	श्री लोकेश चंद्र लाल कनिष्ठ हिंदी अनुवादक/लेखा-प्रथम	20
5.	अलडोना	श्री प्रशांत कुमार सिंह कनिष्ठ हिंदी अनुवादक/लेखा-द्वितीय	24
6.	संस्मरण (रेडियो)	श्री शशांक त्रिवेदी लेखाकार/लेखा-प्रथम	29
7.	कार्यालय में तनाव प्रबंधन	श्री शशांक शेखर सहायक लेखाधिकारी/लेखा-प्रथम	32
8.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)	श्री अमीन अली कनिष्ठ हिंदी अनुवादक/लेखा-प्रथम	36
9.	साइबर क्राइम : भारतीय परिप्रेक्ष्य में	श्री राजीव सिंह सहायक पर्यवेक्षक/ लेखा-द्वितीय	42
10.	गप-शप	श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव पत्नी श्री लोकेश चंद्र लाल कनिष्ठ हिंदी अनुवादक/लेखा-प्रथम	45
11.	डिप्रेशन के 3 महीने और संगत का असर	श्री सतीश राय वरिष्ठ लेखाकार/ लेखा-द्वितीय	49
12.	कमर तोड़ बुढ़ापा - एक कड़वा सच	सुश्री आकृति कुशवाहा पुत्री- श्री अनूप कुमार वरिष्ठ लेखाकार/ लेखा-प्रथम	52

13.	रिश्तों की डोर	स्मृति श्रीवास्तव वरिष्ठ लेखाधिकारी/ लेखा-द्वितीय	57
14.	जननी, जी करता है	श्री चंचल कुमार तिवारी सहायक लेखाधिकारी/ लेखा-प्रथम	59
15.	घोंसला	सुश्री राखी कुमारी लेखाकार/ लेखा-द्वितीय	61
16.	वो औरत है	श्री शिवम कुमार लेखाकार/ लेखा-प्रथम	63
17.	मेरा भारत महान	श्री अनुराग निषाद पुत्र- श्री अनिल कुमार लेखाकार/ लेखा-प्रथम	64
18.	नई शिक्षा नीति 2020	सुश्री नाज़िया कादिर लेखाकार/ लेखा-द्वितीय	65

संदेश

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'लेखा संगम' का नवीन अंक प्रस्तुत करते हुए असीम हर्ष की अनुभूति हो रही है। राजभाषा पत्रिका 'लेखा संगम' का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में न केवल प्रशंसनीय प्रयास है अपितु यह कार्यालय के उदीयमान रचनाकारों के साहित्यिक एवं रचनात्मकता के भाव की अभिव्यक्ति हेतु सुगम मंच भी प्रदान करता है।

हिन्दी मधुर होने के साथ-साथ वैज्ञानिक एवं तकनीकी रूप से समृद्ध भाषा भी है। अपनी सरलता के कारण यह धीरे-धीरे अंतर्राष्ट्रीय संपर्क की भाषा बन रही है। आज का दौर सूचना क्रांति का दौर है और हिंदी सूचना प्रौद्योगिकी, डिजीटलीकरण इत्यादि में भी अपने पंख फैला रही है। हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ गुण यह है कि यह अन्य भाषाओं के शब्दों को भी सरलता से आत्मसात कर लेती है, वास्तव में यह भारतीय संस्कृति की 'अनेकता में एकता' का प्रतिबिंब है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं एवं पत्रिका के स्तर में निरंतर उत्कृष्टता बनाए रखने के लिए रचनाकार एवं संपादक मण्डल बधाई के पात्र हैं। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी 'लेखा संगम' पत्रिका का हर नवीन अंक इसी तरह रचनात्मकता के नए आयाम स्थापित करता रहेगा।

'लेखा संगम' पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं विकास के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(अभिषेक सिंह)

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" अपने 22वें अंक में प्रवेश कर चुकी है। अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के समान ही राजभाषा हिन्दी को सम्मान एवं गौरव प्रदान करना हमारा कर्तव्य है। लेखा संगम के वर्तमान अंक का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के प्रति आपके सम्मान को उजागर करता है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे सुप्रयासों में गृह पत्रिकाओं का विशेष योगदान रहा है। कार्यालयीन राजभाषा पत्रिकायें हिन्दी भाषा में विचारों की अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करती हैं, साथ ही कार्यालय के दिन-प्रतिदिन के कार्यों को हिन्दी में करने की भावना को दृढ़ता प्रदान करती हैं।

कामना करता हूँ कि पत्रिका भविष्य में नये-नये उत्कर्ष के आयामों को प्राप्त करे एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार का यह क्रम भविष्य में भी यूं ही जारी रहे। पत्रिका के सफल सम्पादन पर मैं सम्पादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

(डॉ. सुरेंद्र कुमार)

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हिन्दी पत्रिका "लेखा संगम" के 22वें अंक का प्रकाशन हो रहा है। यह पत्रिका सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के हिन्दी के प्रति समर्पण और निष्ठा का प्रतीक है। हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि कार्यालय के कार्यों में सरल हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें जिससे हिन्दी की तीव्र प्रगति संभव हो सके।

यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार - प्रसार तथा प्रोत्साहन को समर्पित पत्रिका है। रचनाकारों की प्रतिभा का आदर करते हुए मैं विभिन्न भाषा वाले जन समुदाय को एक सूत्र में पिरोने एवं हिन्दी को एक सरल संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करने में सार्थक प्रयास की सराहना करती हूँ तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को बधाई देती हूँ

पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास एवं स्वर्णिम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

तिवारी

(कीर्ति तिवारी)
महानिदेशक
अंतर्राष्ट्रीय सूचना पद्धति एवं
लेखापरीक्षा केंद्र, नोएडा

संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकों.....

लेखा संगम के 22वें अंक की ई-प्रति को लोकार्पित करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। हिन्दी पत्रिकाएँ स्वतन्त्रता संग्राम के समय से ही अपना लोहा मनवाती रही हैं एवं जनमानस को जोड़कर रखने में महती भूमिका निभाती रही हैं। इसी क्रम में राजभाषा हिन्दी भी, भारत सरकार के सभी कार्यालयों को, पत्रिका के माध्यम से जोड़ती हुई कार्मिकों के मानसपटल पर एक अमिट छाप छोड़ती है। आज के इस अत्याधुनिक युग में जहां इलेक्ट्रॉनिक उपकरण विशिष्ट रूप से मोबाइल फोन ने हमारी जीवनचर्या को प्रभावित करते हुए रचनात्मक अभिव्यक्ति के दायरे को सिमट दिया है, वहाँ राजभाषा हिन्दी पत्रिकाएँ रचनात्मक अभिव्यक्ति हेतु मंच प्रदान करती हैं। लेखा संगम में सदैव की भांति ही कहानी, संस्मरण, कविता, यात्रावृत्त .... हर विधा के लेख को समाविष्ट करने का प्रयास रहता है और चेष्टा रहती है कि यह, मात्र एक पत्रिका ना रहे बल्कि पाठकों के अन्तर्मन को प्रभावित करने वाला विचार बने और राजभाषा हिन्दी की प्रगति में अपना योगदान दे।

लेखा संगम के सफल प्रकाशन पर मैं कार्यालय के सभी रचनाकारों को बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि वे आगे भी अपनी लेखनी से पत्रिका हेतु नए-नए विचार लिखते रहेंगे। मैं लेखा संगम की निरंतर प्रगति की कामना करती हूँ।

॥जय हिन्द, जय हिन्दी॥

(साधना राय)
संपादक

18674

SP
ET234198529DN

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले एवं हक) तमिलनाडु, चेन्नई-18 टेलीफ़ोन: 044-24324530 फ़ैक्स: 044-24320562 Website : www.agae.tn.nic.in	सत्यमेव जयते	**INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), TAMILNADU, 361, ANNA SALAI, CHENNAI-18 Phone: 044-24324530 Fax: 044-24320562 Website : www.agae.tn.nic.in**

हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका रिव्यू/ 28635 **दिनांक :20.10.2023**

सेवा में, हिन्दी अधिकारी कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व. ह.), प्रथम उत्तर-प्रदेश, प्रयागराज-211001	To, The Hindi Officer Office of the Principal Accountant General (A&E)-I Uttar Pradesh, Prayagraj-211001

विषय: आपकी हिंदी गृह पत्रिका "लेखा संगम" के 21वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "लेखा संगम" का 21वां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज- सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक में प्रकाशित **श्री राजेन्द्रन नायर द्वारा लिखित "21 किलोमीटर का मेरा पहला सफर", डॉ. नमिता चंद्रा द्वारा लिखित "मन के हारे हार है", श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव द्वारा लिखित "आम-आदमी" सुश्री साधना राय द्वारा लिखित "आँखों ने सब देखा", श्री शशांक त्रिवेदी द्वारा लिखित "समय यात्रा", श्री चंचल कुमार तिवारी द्वारा लिखित "नारी नहीं अबला या बेचारी", और श्री शिवम कुमार द्वारा लिखित "राम वन गए तो बन गए" विशेष रूप से उल्लेखनीय है।** राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

हिन्दी सेल

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व ह.) उ.प्र.
हिन्दी अनुभाग
डाक संख्या 58048
दिनांक 6/11/23

डॉ. सुभाषचंद यादव (हिंदी अधिकारी)

SP
EK 818010155 IXI

सं॰ हि॰ प्रशा॰/2023-24/97

प्रधान निदेशक रक्षा - वाणिज्यिक
लेखापरीक्षा का कार्यालय, बंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT DEFENCE- COMMERCIAL, BENGALURU-560001.

दिनांक - 26/10/2023

सेवा में,

वरि. लेखाधिकारी / हिन्दी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश प्रयागराज - 211001

विषयः- प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी ई - पत्रिका 'लेखा संगम' का 21 वां अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है| पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

हिन्दी (सेल)

डाक अनुभाग
डायरी संख्या 58047
दिनांक 6/11/23

भवदीया,
सरिता
हिन्दी अधिकारी

D:\Sandeep kumar\प्रशंसा पत्र.docx

6

SP
EP714493123 IH

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.,सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ -160017
Office of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T., Sector-17E, CHANDIGARH - 160017
फैक्स - 0172-2703110, दू. रा. - 2702272, 2702072

आज़ादी का अमृत महोत्सव

क्रमांक - हिंदी कक्ष/समीक्षा/10/2023-24/542 दिनांक-31.10.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश,प्रयागराज-211001

विषय - विभागीय हिंदी पत्रिका 'लेखा संगम' के 21वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'लेखा संगम' के 21वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

डॉ. नमिता चंद्रा की 'मन के हारे हार है', श्री प्रशांत कुमार सिंह की 'एकांत (हम्पी)', सुश्री साधना राय की 'आँखों ने सब देखा', श्री शशांक त्रिवेदी की 'समय यात्रा', श्री चंचल कुमार तिवारी की 'नारी नहीं अबला या बेचारी',श्री शिवम कुमार की 'राम वन गए तो बन गए' रचनाएं विशेष रुप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

हिन्दी (सेल)

लेखा अनुभाग
58505
7/11/23

भवदीय

नरेश कोर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

7

सत्यमेव जयते

SP
ED01 2872416 DN

International Centre for Information Systems & Audit

International Training Centre of Comptroller & Auditor General Of India
www.cag.gov.in/icisa/en

संख्या:Admn-i-Est10Rajb/1/2018-Admn-part1(efile No.8467)/390 दिनांक:01.11.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी)-प्रथम
प्रयागराज-211001

विषय: आपके द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "लेखा संगम के 21 वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिन्दी पत्रिका "लेखा संगम के 21वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, रचनाएँ और विचार सरल, पठनीय एवं प्रशंसनीय है।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटी बनाने मे योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हमारे कार्यालय आईसीसा नोएडा की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (प्रशासन)

हिं-अ (सेल)

5948
9/11/23

8

A-52, Sector-62, Institutional Area, Phase-II, Noida - 201309 (U.P.) INDIA
Tel.: +91-120-2400050, 51, 52 Fax : +91-120-2400041 / 2401430

File No. हिन्दीअनुभाग/लेखासंगम(17)/21वांअंक/2023-24 (Computer No. 17318)
Generated from eOffice by AMEEN ALI, JHT (Ameen Ali), JUNIOR HINDI TRANSLATOR, AG-(A&E-I)-UTTAR PRADESH on 27/02/2024 04:13 PM

1359408/2023/HINDI CELL (AG (A&E-I) UP Allahabad)

SP
ES 9998693077 D/11

भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी – 781 029
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI – 781 029

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to truth in Public Interest

पत्र संख्या: हिंदी कक्षा/पत्रिका समीक्षा/2023-24 | 199 — दिनांक: 02/11/2023

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज- 211001

03 NOV 2023

संदर्भ:- हि.अ./लेखा संगम/21वाँ अंक/55296 दिनांक- 12.10.2023

विषय: हिंदी पत्रिका "लेखा संगम" के 21वें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "लेखा संगम" के 21वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रूचिकर एवं प्रेणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री शशांक त्रिवेदी, लेखाकार का लेख "समय यात्रा", सुश्री साधना राय, हिंदी अधिकारी की लेख "आँखों ने सब देखा" तथा डॉ. नमिता चन्द्रा, सहायक लेखाधिकारी की लेख "मन के हारे हार है" प्रशंसनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)-प्रथम
61003
16/11/23

हिंदी (सेल)

भवदीय

03/11/2023

हिंदी अधिकारी

Tele (EPABX) : 0361-2307712/2307716/2301656/2305215 FAX :0361-2303142/2305901
E-mail:agaeassam@cag.gov.in

File No. हिन्दीअनुभाग/लेखासंगम(17)/21वांअंक/2023-24/ (Computer No. 173121)
Generated from eOffice by AMEEN ALI, JHT (Ameen Ali), JUNIOR HINDI TRANSLATOR, AG-(A&E-I)-UTTAR PRADESH on 27/02/2024 04:13 PM

RL
RI775395589IN

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय, मध्य प्रदेश,
लेखा भवन, झांसी रोड, ग्वालियर-474002

क्रमांकः प्रशासन/हिंदी/अभिमत/फा.सं.-47/डी-361 दिनांकः 18/12/23

सेवा में,
संपर्क अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)- प्रथम, उत्तर प्रदेश
20, सरोजिनी नायडू मार्ग,
प्रयागराज-211008

विषयः- कार्यालय की हिंदी पत्रिका "लेखा संगम" के 21वें अंक की पावती एवं अभिमत ।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "लेखा संगम" के 21वें अंक के अवलोकन हेतु लिंक प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण हेतु सादर आभार। पत्रिका में समाहित रचनाएं पठनीय एवं विचारणीय हैं। सुश्री नमिता चंद्रा की लेखनी से प्रसूत कहानी "मन के हारे हार है"; श्री सतीश राय का लेख "भारत दुनिया का सबसे बड़ा अस्पताल बन जायेगा"; श्री प्रत्युष अवस्थी की कहानी "तिण्ण की निश्छल भक्ति" तथा श्री शिवम कुमार की कविता "राम वन गए तो बन गए" रोचक एवं प्रेरणादायक हैं।

पत्रिका हिंदी के प्रचार और प्रसार में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

हिन्दी (सेल)

18/12/23
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/ प्रशासन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०)-प्रथम
उ०प्र० प्रयागराज
डाक अनुभाग
डायरी सं० 71135
दिनांक 2/1/24

हि.कि./ले.प./बाह्यपत्रिका/2023-24

I/470442/2023

भारत सरकार
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला – 171 003

सत्यमेव जयते

Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla 171 003

संख्या: हि.क./बाह्य पत्रिका/2023-24/I/470442/2023दिनांक:19-12-2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखाधिकारी (हिंदी),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी),
प्रथम, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

विषय:- कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'लेखा संगम' के 21वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका '**लेखा संगम**' के 21वें अंक के **ई-**संस्करण की प्रति प्राप्त हुई। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में सम्मिलित, '21 किलोमीटर का मेरा पहला सफर, मन के हारे हार है, एकांत (हम्पी), आम आदमी, बढ़ती गर्मी या घटते पेड़, समय यात्रा, शिलांग यात्रा वृतांत' आदि लेख काफ़ी रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगे। इस के अतिरिक्त कविताएँ, 'नारी नहीं अबला या बेचारी, ग़ज़ल, राम वन गए तो बन गए, प्रकृति का अद्भुत सौन्दर्य आदि काफी उत्कृष्ट एवं रूचिकर लगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं इस की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीया,

Signed by Anuradha Sood
Date: 19-12-2023 17:20:50
Reason: Approved

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (हिंदी),
Anuradha Sood, SAO(HINDI)-AS, HINDI

File No. हनिदीअनुभाग/लेखासंगम(17)/21वांअंक/2023-24/ (Computer No. 173121)
Generated from eOffice by AMEEN ALI, JHT (Ameen Ali), JUNIOR HINDI TRANSLATOR, AG-(A&E-I)-UTTAR PRADESH on 27/02/2024 04:13 PM

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर
JAMMU & KASHMIR, SRINAGAR

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
Dedicated to Truth in Public Interest

क्रमांकः प्रमले/ले.व हक./हि.प्र./विभागीय राजभाषा पत्रिकाएं/2022-23/ 263 दिनांकः 15 12 /2023

02 FEB 2024

SP
EE918656131 IN

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, उत्तर प्रदेश
प्रयागराज

विषयः कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'लेखा संगम' के 21वें अंक का प्रेषण ।

संदर्भः हिं.अ./लेखा संगम/21वां अंक/55296 दिनांकः12/10/2023

महोदय/ महोदया

संदर्भित पत्र के साथ आपकी पत्रिका **'लेखा संगम'** का नवीन अंक प्राप्त हुआ । आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें। विभागीय पत्रिकाएं अपने कार्यालय एवं अपने राज्य की संस्कृति और कार्यप्रणाली का उत्तम चित्रण करती है। इनके माध्यम से हमें कार्यालय एवं समाज में हो रही घटनाओं का सुंदर चित्रण प्राप्त होता है। आपकी पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं समान रूप से सरल, सहज, रोचक एवं ज्ञानवर्धक तो है ही इसके अतिरिक्त पत्रिका की साज सज्जा एवं मुद्रण भी अति उत्तम है, जिसके लिए लेखकों एवं संपादक मंडल के सदस्यों को विशेष बधाई ।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मण्डल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका **'लेखा संगम'** के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

प्रवीन कुमार
14/12/23

सहायक लेखा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

एम. वाई. राथर एवेन्यू रोड, निकट प्रदर्शनी मैदान, श्रीनगर-190009/ M.Y.Rather Avenue Road, Near Exhibition Ground, Srinagar-190009
E-mail: agaejammukashmir@cag.gov.in

83143

File No. हिन्दीअनुभाग/लेखासंगम(17)/21वांअंक/2023-24/ (Computer No. 173121)
Generated from eOffice by AMEEN ALI, JHT (Ameen Ali), JUNIOR HINDI TRANSLATOR, AG-(A&E-I)-UTTAR PRADESH on 27/02/2024 04:13 PM

जब धूप बिछाए फूल बिछौना

श्री यश मालवीय
पर्यवेक्षक (सेवानिवृत्त)

वसंत की पगध्वनि आहट दे रही है। हालांकि आते आते वह रह रहकर ठिठक जाता है। उसके ठिठक जाने से मन बेचैन होने लगता है। इस बेचैनी को भीतर का मौसम तो भांप लेता है पर बाहर का मौसम कुछ समझ नहीं पाता। वास्तव में वसंत आता नहीं, अब उसे लाना होता है। टेरना गुहराना होता है। उसे आवाज़ देनी होती है। वह कभी सुनता है तो कभी आवाज़ की अनसुनी भी कर देता है। उसे बार बार पुकारना होता है। मुक्तिबोध के शब्दों में कहें तो एक पुकारती हुई पुकार के साथ उसे बुलाना होता है, आमंत्रित करना होता है। अब यह वसंत पर निर्भर करता है कि वह आपका बुलौवा किस रूप में स्वीकार अथवा अस्वीकार करता है। वैसे अपनी पुकार पर आस्था रखकर उसे बुलाया या टेरा जाए तो वह अवश्य ही आता है। बदले हुए समय में उसके आने की अपनी शर्तें हैं। सबसे ज़रूरी शर्त तो यह है कि अब तक उसे तारीख ही समझा गया है, अब उसे महज़ एक तारीख न समझा जाए, केवल एक ऋतु भर न समझा जाए बल्कि समग्रता में उसके स्वभाव को समझा जाए। पलक पांवड़े बिछाए जाएं। उसके बारे में एक उत्कंठा हो। विद्यानिवास मिश्र जी से उसे थोड़ी सी शिकायत है, जो यह कहते थे कि वसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं। आपको उत्कंठा नहीं होगी तो भला वह क्यों आएगा। उत्तराधुनिकता के दौर में कोयल की कूक अगर हाशिए पर चली गई है तो अचरज या आश्चर्य कैसा? बिना बात के लिए नास्टेलजिक होने की जरूरत नहीं है। अतीतजीवी मक्खियां जब बहुत परेशान करने लग जाएं, तो अपने वर्तमान को नए सिरे से महसूस करना होगा, तभी भविष्य के दरवाज़े खुल सकेंगे।

आमों में बौर को आना है, वह तो देर सबेर आएगा ही। हमें अपने इंतज़ार पर भी भरोसा करना होगा। वसंत के मायने अगर बदल रहे हैं, तो इस परिर्वतन और बदलाव को भी सही परिप्रेक्ष्य में समझना हमारी नैतिक ज़िम्मेदारी होनी चाहिए। समय के साथ अब अपना वसंत पूरी तरह से वेलेंटाइन हो चुका है। कवि हरीश चंद्र पांडे कहते हैं-

बेहद प्रकंपित
बेहद अस्थिर
बेहद तनावग्रस्त हैं
वसंत के तार
सितारवादक वसंत की
घाटियों से गुज़र रहा है।

सितार के तार का तनावग्रस्त होना यूं ही नहीं है। मन भी क्या कम तनाव में रहता है, पर वहीं से रचना के नए कल्ले भी फूटते हैं। वसंत बहार का अपना सौरभ है, सुरों का अपना सिंगार है। हमें हमेशा रोते रहने की अपनी शाश्वत आदत छोड़नी होगी, तभी तो अपना यह बदला हुआ वसंत, बदले हुए अंदाज़ में मुस्कुराएगा। दूर दूर तक गंगा यमुना के फैले हुए कछार में मीलों मील सरसों बिछ गई है। यह प्रकृति की शुभ रंगों से रंगी पाती हर किसी के नाम है, बस इन्हें पढ़ने का सलीका आना चाहिए, ताकि जनाब फ़ैज़ अहमद फैज़ को फिर यह कहना न पड़े-

न गुल खिले, न उनसे मिले, न मय पी है
अजीब रंग में अबकी बहार गुजरी है।

मन तो करता है काश कभी कोई ऐसी बहार भी आती जो कभी गुजरती ही नहीं। अब तो इंटरनेट पर वसंत आता है और कभी कभी तो आने के साथ उल्टे पैर लौट भी जाता है और हम देखते रह जाते हैं। इसके ज़िम्मेदार हम ही हैं कि उस पर बाकायदा ध्यान नहीं देते। तवज्जो न मिलने पर वह मायूस हो जाता है। यही वसंत के दिन पहले जब आते थे तो कहना पड़ता था-

दिन वसंत के आ गए, हंसे खेत खपरैल
एक हँसी में घुल गया, मन का सारा मैल।।

जब हमारे आसपास पतझर, पत्तों को ताश के पत्तों की तरह फेंट रहा हो तो हमें वसंत के दर्द को गहरे संवेदनशील ताप के साथ किसी पहेली की तरह ही बूझना पड़ेगा। यह पहेली समझ आ जायेगी तो वसंत का गणित भी समझ आ जायेगा। हम वसंत को वसंत ही रहने दें, कोई नाम न दें तो भी चलेगा। पर उसका चेहरा तो न बिगाड़ें। गुलज़ार साहब भी इसीलिए प्यार को प्यार ही बने रहने देने की बात करते हैं, उसे कोई नाम न देने की वकालत करते हैं।

फरवरी अगर देखते देखते अप्रैल हो जाए, वसंत अगर देखते देखते जेठ बैसाख हो जाए तो हमें अपने भीतर झांकना होगा। पारिस्थितिक तंत्र में असंतुलन, प्रकृति का अनाप शनाप दोहन, उसके साथ खिलवाड़, सब कुछ ग्लोबल वार्मिंग के मूल में है। वह कौन सी बात है जिसके चलते पूरा जाड़ा बीत जाने के बाद बर्फ़ गिर रही है। सोचिए, कितनी चिन्ता की बात है, जब फूल ही खिलने में संकोच का अनुभव करने लग जाएं, असमंजस महसूस करने लगें। आमा साहब आज़मी कहते हैं-

दो चार कलियों पे निखार आया तो क्या आया
मज़ा तब है कि कांटे भी पुकार उठें बहार आई, बहार आई

वसंत पंचमी पर वसंत के अग्रदूत महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला को ही याद न करें तो फिर काहे का वसंत। वसंत, फागुन की ज़मीन तैयार करता है। वसंत पंचमी निराला का जन्मदिन है, तो होली महीयसी महादेवी जी का, जो वर्षों निराला की पौरूषेय कलाई पर राखी बांधती रहीं। वसंत तो ऐसा मौसम है जो सारी विसंगतियों और

विडंबनाओं को अपनी सुगंध की नदी में बहा ले जाता है। दुनिया में अगर प्रेम रहेगा तो कभी वसंत अप्रासंगिक हो ही नहीं सकता। वसंत नहीं बदला है, बस उसे मनाने के तरीके थोड़े से बदल गए हैं, देखिए न अपने चारों तरफ़

दूर दूर तक बिछ गई, सरसों मीलों मील
धीरे धीरे बस गई, यादों की तहसील।।

फूलों के अक्षर में आज भी गंध के निवेदन होते हैं, तभी तो हर गीत आत्मा के अतल में संकीर्तन की तरह ही उठता है। कविता के कीर्तिपुरुष केदारनाथ अग्रवाल की कविता वसंती हवा का झोंका आज भी भला किसको नहीं नहला जाता। जब वह कहते थे, हवा हूं हवा, मैं वसंती हवा हूं... तो यह सुनकर भीतर का मौसम हरा होने लगता था। कैलाश गौतम का यह दोहा आज भी भिगो जाता है, जब किसी डायरी या किताब में मोरपंख मिल जाते हैं,

लगे फूंकने कान में, बौर गुलाबी शंख
कैसे रहें किताब में, हम मयूर के पंख।।

सुभद्राकुमारी चौहान तो वसंत से ही सवाल करती थीं, वीरों का कैसा हो वसंत। मैं घोंघा वसंतों की बात नहीं करता। मुझे बहुत तो बचपन से ही गेंदों के फूलों से सजा, सरस्वती का सौम्य साधक वसंत देखने को मिला है। हां मेरा आशय है छायावाद के महान समालोचक गंगाप्रसाद पांडेय की ओर, जिन्होंने सबसे पहले निराला को महाप्राण और महादेवी जी को महीयसी कहा था। गंगाप्रसाद जी को महादेवी जी वसंत कहकर ही बुलाती थीं।

हर युग और हर समय का अपना वसंत होता है। हम आधुनिक हुए हैं तो क्या वसंत आधुनिक नहीं होगा। चोट तो भाई अब भी लगती है जब कोई फुलगेंदवा से मारता है।

फुलगेंदवा न मारो, लगत करेजवा पे चोट, वाला गीत और सन्दर्भ याद कीजिए। अतीत से रोशनी लेनी चाहिए पर उसे अपने वर्तमान और भविष्य पर सवारी नहीं करने देनी चाहिए, वर्ना ज़िंदगी की चाल ही बिगड़ जाने का खतरा बना रहता है -

जो बोझ बन के जिन्दगी की चाल रोक दे
उसको उतार फेंकिए वो सर ही क्यों न हो।

हमारे कंप्यूटर युग का भी अपना अलग ही वसंत है, जो ज्ञान की खुशबू से भी हमें सींचता है। वसंत के नए नए फूल शिशुओं से भी संवाद करना होगा, यह संवाद भी नए रास्ते खोलेगा ही। कई बार तो असहमतियां भी संवाद के रास्ते खोलती हैं। इन सारी प्रक्रियाओं से ही आज के वसंत की सही शिनाख्त सम्भव हो पायेगी और हम उसकी पगध्वनियों का वास्तविक रोमांच जी सकेंगे।

अपना इतिहास जानें

श्री राघवेंद्र सिंह
वरिष्ठ लेखाधिकारी

इतिहास शब्द प्राचीन ग्रीक शब्द 'हिस्टोरिया' से लिया गया है जिसका अर्थ है पूछताछ करना या विश्लेषण द्वारा ज्ञान अर्जित करना। सामान्य शब्दों में, इतिहास का तात्पर्य हमारे अतीत के बारे में अध्ययन या ज्ञान प्राप्त करना है जैसे कि हमारे पूर्वज कैसे रहते थे, कहाँ रहते थे, उन्होंने कौन सी संस्कृति अपनाई, संचार के साधन क्या थे, वे कैसे व्यापार करते थे, उनकी कमाई का तरीका क्या था और भी बहुत कुछ। लेकिन हम इसके बारे में ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकते हैं? हमारे पास कोई टाइम मशीन तो है नहीं जिसके माध्यम से हम अतीत में यात्रा कर सकें और उस समाज को देख सकें जिसमें वे रहते थे। मन में एक प्रश्न उठना चाहिए कि इतिहास का अध्ययन करने की क्या आवश्यकता है? हम वर्तमान में जी रहे हैं, हमें भविष्य की तलाश करनी चाहिए, अतीत की क्यों? इसका उत्तर इस तथ्य में निहित है कि इतिहास का अध्ययन अपने अतीत को जानने, वर्तमान को बेहतर बनाने और भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए किया जाता है। इतिहास के अध्ययन के बाद कई समाधान मिल सकते हैं। हम सुधारात्मक उपाय करके अपने अतीत की मदद से अपने भविष्य को बेहतर ढंग से सुरक्षित भी कर सकते हैंI

अपना इतिहास कैसे जानें? इसका समाधान हमारे इतिहास के स्रोतों को जानने में निहित है। इतिहास के ये स्रोत अतीत के चित्र उपलब्ध कराते हैं। कभी-कभी इतिहास के स्रोत स्पष्ट नहीं होते या कड़ियाँ गायब होती हैं या बहुत कम साक्ष्य उपलब्ध होते हैं। तब हम इतिहास के उपलब्ध स्रोतों के आधार पर इतिहास का पुनर्निर्माण करते हैं। यह सम्भव है कि हम यह जानने में सक्षम नहीं हो पा रहे कि अतीत में वास्तव में क्या हुआ था, लेकिन यदि हम उपलब्ध स्रोतों का ध्यानपूर्वक विश्लेषण करें, तो हम अपने अतीत का एक विश्वास योग्य प्रतिबिम्ब स्थापित कर सकते हैं। जब भी, अधिक साक्ष्य सामने आएंगे, इतिहास के परिप्रेक्ष्य को संशोधित किया जा सकता है। कभी-कभी कोई नई खोज अतीत की तस्वीर को पूरी तरह से बदल देती है। इतिहास के स्रोतों में शोध एक सतत प्रक्रिया है।

इतिहास को, इतिहास के स्रोतों से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर बताया जाता है जिसे सामान्य तौर पर दो क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जा सकता है- साहित्यिक और पुरातात्विक। इतिहासकारों के दृष्टिकोण से,

साहित्यिक स्रोतों में लंबे या छोटे, लिखित या मौखिक सभी साहित्य/लेख शामिल होते हैं। पुरातत्व स्रोतों में सभी मूर्त वस्तुएँ एवं सामग्रियाँ सम्मिलित होती हैं।

साहित्यिक स्त्रोत– साहित्यिक स्रोतों का ऐतिहासिक दृष्टि से सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया जाना चाहिए। यह उस समाज की जटिलता और अतीत की एक छवि प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक संदर्भ बनाने के लिए साहित्यिक स्रोतों से ऐतिहासिक जानकारी के उचित विश्लेषण, कौशल और रचनात्मकता के साथ सामने लाया जाता है। भारत में, पारंपरिक लेखन सामग्री और विधियाँ कई शताब्दियों तक ज्यादातर ताड़ के पत्तों पर लिखी जाती रही। इन्हें पांडुलिपियों के रूप में जाना जाता था (संस्कृत में तालोपत्रा, तमिल में अलाई के नाम से जाना जाता था)। इस्तेमाल किया गया पत्ता या तो टैलिपोट पाम (कोरिफा अम्ब्राकुलिफेरा) या पलमायरा पाम (बोरिसम फ्लैबेलिफोर्मिस) से था। इन पत्तों को एक या दो स्थानों पर छेद कर पत्तों के चारों ओर डोरी बुनी जाती थी। ताड़ के पत्तों की पांडुलिपि का आवरण साधारणतया लकड़ी से बना होता था तथा दुर्लभ मामले में हाथी दांत का उपयोग किया जाता था I यह भी ध्यान देने योग्य है कि वेद संस्कृत में लिखे गये हैं। द्रविड़ भाषाओं में सबसे पुराना साहित्य तमिल का है, उसके बाद कन्नड़। ऋग्वेद की पूर्वशास्त्रीय संस्कृत कालिदास काव्य की शास्त्रीय संस्कृत से भिन्न है। भारतीय साहित्यिक स्रोतों के अतिरिक्त, भारत मे आए विभिन्न विदेशी यात्रियों के अद्भुत यात्रा विवरण उस युग की उत्कृष्ट ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का परिचय प्रदान करते हैं जिसमें उन्होंने राज्य विशेष का दौरा किया।

पुरातात्विक स्रोत- यह भौतिक अवशेषों के माध्यम से मानव अतीत के इतिहास के अध्ययन से संबंधित है। पुरातात्विक अध्ययन में उत्खनन एक महत्वपूर्ण साधन है। उत्खनन बुनियादी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से अतीत के इतिहास का पता लगाया जाता है। उत्खनन के दौरान इतिहास के विभिन्न स्तर को वर्तमान के क्षितिज पर लाया जाता है। कलाकृति (Artefact), प्राकृतिक वस्तु/सामग्री से अलग मानव हाथों द्वारा बनाई या बदली गई कोई भी पोर्टेबल वस्तु है।

पुरालेखीय स्रोत- पुरालेख का अर्थ है प्राचीन शिलालेखों का अध्ययन एवं व्याख्या। शिलालेख एक लेखन है जो किसी पत्थर, लकड़ी, धातु, हाथीदांत, पट्टिका, कांस्य मूर्तियों, ईंट मिट्टी, सीपियों, मिट्टी के बर्तनों आदि पर उकेरा जाता है। पुरालेख में शिलालेखों को समझना और उनमें मौजूद जानकारी का विश्लेषण सम्मिलित है। इसमें पुरालेखन, प्राचीन लेखन का अध्ययन भी शामिल है। अभी ज्ञात स्रोतों के आधार पर सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त सबसे पुराना शिलालेख हड़प्पा लिपि है जिसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। सबसे पुराने पढ़े गए शिलालेख चौथी ईसा पूर्व के अंत के हैं जो ब्राह्मी और खरोष्ठी में हैंI पांडुलिपियों की तुलना में, शिलालेखों में स्थायित्व का लाभ होता है क्योंकि समय की अवधि के दौरान इनमें बहुत कम टूट-फूटहोती है और उन्हें आसानी से बदला नहीं जा सकता है। कोई भी अतिरिक्त परिवर्तन भी आसानी से दिखाई देता है।

मुद्राशास्त्र – सिक्कों के अध्ययन में उस सामग्री का विश्लेषण धातुओं के स्रोत की पहचान, सिक्कों का वर्गीकरण शामिल है, जिससे सिक्के बनाए गए थे। अधिकतर प्राचीन सिक्के आकस्मिक रूप से मिलते हैं। यह ऐतिहासिक युग में होने वाले व्यापार के नियमों, व्यापार, एकाधिकार का सजीव चित्र प्रस्तुत

करता है। वजन के आधार पर सिक्कों के अध्ययन को मेट्रोलॉजी के रूप में जाना जाता है। सिक्कों के परिप्रेष्य में वजन और सामग्री सबसे महत्वपूर्ण है। भारतीय सिक्का भार प्रणाली की मूल इकाई गोरजाबेरी (एब्रस प्रिंकैट्रीज़) का लाल-काला बीज था जिसे रत्ती या रति के नाम से जाना जाता था। भारतीय उपमहाद्वीप में पाए गए सबसे पुराने सिक्के तांबे और चांदी के पंचमार्क सिक्के हैं। इन सिक्कों में पहचान के लिए विभिन्न आकृतियाँ अंकित हैं।

मूर्तिकला स्त्रोत (मूर्ति)- यह एक त्रि-आयामी मानव निर्मित कला वस्तु है। मूर्तिकला में प्रयुक्त सामग्री के आधार पर विभिन्न प्रकार की मूर्तियों का निर्माण किया जा सकता है। मूर्तिकला पुरातन काल के इतिहास को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करती है। मूर्तियों के माध्यम से इतिहासीय संस्कृति के विभिन्न कालखंडों को देखा जा सकता है। साधारण मानव उपकरण से लेकर खजुराहो की प्रसिद्ध मूर्तियां, प्राचीन भारत की मूर्त सांस्कृतिक परम्पराओं की विशिष्टता का प्रतिनिधित्व करती हैं। सम्भवत: भारत की पहली मूर्ति सिंधु घाटी सभ्यता (2500 ईसा पूर्व) की नाचती हुई लड़की की कांस्य मूर्ति है। दैमाबाद (महाराष्ट्र) की पुरातात्विक खुदाई में 1500 ईसा पूर्व की कांस्य मूर्तियों का एक समूह खोजा गया है।

अतएव विभिन्न स्रोतों के माध्यम से स्वयं इतिहास खोजने का प्रयास करें और उसके बाद बताए गये इतिहास पर विश्वास करें I

श्री अन्न

सुश्री साधना राय
हिंदी अधिकारी

हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी

आओ विचारे आज मिलकर ये समस्याएँ सभी

यद्यपि हमे इतिहास अपना प्राप्त पूरा है नहीं

हम कौन थे, इस ज्ञान को, फिर भी अधूरा है नहीं।

वास्तव में कवि की ये पंक्तियाँ आज के वर्तमान परिदृश्य में पूर्ण रूप से प्रासंगिक लगती हैं जब आज के युवा जेनोसेंट्रिज़्म अर्थात अपनी संस्कृति, खान-पान, पहनावा, बोल-चाल को हेय समझने का भाव,से ग्रसित जान पड़ते हैं। अपनी संस्कृति के ऊपर पाश्चयात संस्कृति को श्रेष्ठ समझने वाले ये लोग तब अपनी मतांधता से जागते हैं जब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय संस्कृति की धूम मचती है। ऐसा ही कुछ हुआ श्री अन्न अर्थात मोटे अनाज अर्थात millets के साथ।

भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र को प्रस्ताव दिया था कि साल 2023 को International Year of Millets (IYOM) के रूप में घोषित किया जाए। भारत के इस प्रस्ताव को 72 देशों ने समर्थन दिया था जिसके बाद संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) ने मार्च, 2021 को घोषणा की कि 2023 कोInternational Year of Millets के रूप में मनाया जाएगा। फिर क्या था! दुनिया के साथ-साथ भारत के लोगों ने भी ब्रेड, पीत्ज़ा, बर्गर से ध्यान हटाकर श्री अन्न के विषय में जानकारी हासिल करना शुरू किया और उसके फायदे देखकर हर घर के रसोईघर में श्री अन्न का स्थान स्थ्याई कर दिया गया। वैसे आज जिस श्री अन्न (मोटे अनाज) की चर्चा हो रही है, वह भारत के लिए नया बिलकुल नहीं है। ज्वार के सबूत तो भारत में हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों में भी मिले हैं। अपने देश में 3000 से 5000 साल पहले से इन मिलेट्स को खाद्य के रूप में व्यवहृत किए जाने के सबूत मौजूद हैं। तो आइए जानें कि श्री अन्न (Millet) है क्या और क्या हैं इसके फायदे?

Millet शब्द फ्रेंच के 'mille' से व्यत्पन्न है जिसका अर्थ होता है सहसत्रों क्यूँ कि एक मुट्ठी में अन्न के सहसत्रों दाने समा सकते हैं। Millets को हिन्दी में नाम श्री अन्न दिया गया है जो कि

कर्नाटक के लोगों द्वारा millets के लिए व्यवहृत सिरी धान्य नाम से लिया गया है। हिन्दी में श्री का अर्थ होता है श्रेष्ठ और इस तरह श्री अन्न हुआ अनाजों में श्रेष्ठ। **कृषि विशेषज्ञों के अनुसार, मोटे अनाज को कर्नाटक में 'श्रीधान्य' कहा जाता है क्योंकि यह न केवल स्वादिष्ट और पोषण से भरपूर होता है, बल्कि इसमें ढेर सारे औषधीय गुण भी होते हैं।**

इतिहास: श्री अन्न(मिलेट्स), एक छोटे बीज वाली घास के प्रकार का होता है जो वनस्पति प्रजाति "(Poaceae)" से संबंधित हैं। वास्तव में यह छोटे-बीज वाली घासों का एक समूह है, जो व्यापक रूप से दुनिया भर में मानव भोजन के लिए अनाज और चारे के रूप में उगाया जाता है। भारत में, कुछ सबसे पुराने ग्रन्थों में से एक यजुर्वेद में इनका उल्लेख किया गया है। 50 साल पहले तक भारत में श्री अन्न जैसे बाजरा, ज्वार, रागी, कोदो, कुटकी आदि प्रमुख अनाज थे परंतु समय के साथ इनका महत्व कम होता गया और भारतीय जनता ने पाश्चात्य परंपरा से प्रभावित होकर मोटे अनाजों को मुख्यरूप से ग्रामीण खाने के रूप में देखना शुरू कर दिया जिस कारण इनकी खेती में भी कमी आई और साथ ही, किसानों की फसल के लिए बाजार भी घटे। आज भारत सरकार का ये लक्ष्य है कि देश भर में श्री अन्न के विषय में जागरूकता बढ़े और कृषकों के लिए भी आय का साधन बढ़े।

श्री अन्न (मिलेट्स) एक प्रकार का अनाज है जो विश्व के कई भागों विशेषत: अफ्रीका एवं एशिया में लोकप्रिय है। यह विश्व के कई हिस्सों विशेष रूप से अफ्रीका एवं एशिया का मूल भोजन है। वर्ल्ड फूड प्रोग्राम के अनुसार, अनुमानित 1.2 बिलियन आबादी अपने आहार के रूप में श्री अन्न (मिलेट्स) का सेवन करती है। भारतीय श्री अन्न पौष्टिकता से भरपूर समृद्ध, सूखा सहिष्णु फसल है जो ज्यादातर भारत के शुष्क एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में उगाया जाता है। यह लाखों संसाधन रहित गरीब किसानों के लिए खाद्य एवं पशु-चारे का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं तथा भारत की पारिस्थितिक और आर्थिक सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय श्री अन्न पौष्टिकता से भरपूर गेहूं और चावल से बेहतर है क्योंकि यह प्रोटीन, विटामिन और खनिजों से भरपूर होते हैं। भारत विश्व में श्री अन्न के शीर्ष 5 निर्यातकों में से एक है।

भारत श्री अन्न के प्रमुख उत्पादकों एवं आपूर्तिकर्ताओं में से एक है। भारत में दो वर्गों के श्री अन्न उगाए जाते हैं। प्रमुख श्री अन्न (Major millets) में ज्वार, बाजरा और रागी शामिल हैं, जबकि गौण श्री अन्न में (Minor millets) में कंगनी, कुटकी, कोडो और साँवा शामिल हैं। भारत में मुख्य श्री अन्न उगाने वाले राज्य राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश हैं, इन राज्यों में बड़ी संख्या में श्री अन्न (मिलेट्स) किसान हैं जो घरेलू व अंतर्राष्ट्रीय दोनों बाजारों के लिए अनाज उगाते हैं। इन राज्यों के अतिरिक्त, भारत में कई छोटे, श्री अन्न उत्पादक क्षेत्र भी हैं जिनमें उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश राज्य शामिल हैं।

<u>श्री अन्न (मिलेट्स) के प्रकार:</u>

1. *बाजरा (Pearl Millet)*
2. *जवार (Sorghum)*
3. *रागी (Finger Millet)*
4. *छोटा बाजरा (Small Millets):*

I. कंगनी/फॉक्सटेल (Foxtail millet)

II. सांवा/बार्नयार्ड (Barnyard Millet)

III. कोडो (Kodo Millet)

IV. चीना/प्रोसो (Proso Millet)

V. कुटकी (Little Millet)

दो छद्म मिलेट (Two Pseudo Millets)

I. बक व्हीट (कुट्टू) {Buck wheat(Kuttu)}

II. ऐमारैंथस (चौलाई){Amaranthus (Chaulai)}

श्री अन्न (मिलेट्स) के लाभ:

- अन्य अनाजों की तुलना में श्री अन्न में बेहतर सूक्ष्म पोषक तत्व एवं बायोएक्टिव फ्लेवोनोइड पाए जाते हैं। यह स्वास्थ्यवर्धक पौष्टिकता से भरपूर फसल है।
- श्री अन्न में आयरन, जिंक तथा कैल्शियम जैसे खनिजों का उपयुक्त स्रोत है तथा यह मधुमेह की रोकथाम से भी जुड़ा होता है।
- श्री अन्न ग्लूटेन-मुक्त होता है और सीलिएक रोग के रोगियों द्वारा इसका सेवन भी किया जा सकता है।
    - श्री अन्न का हाइपरलिपिडिमिया के प्रबंधन और रोकथाम और सीवीडी के जोखिम पर लाभकारी प्रभाव पड़ता है।
    - श्री अन्न वजन घटाने और उच्च रक्तचाप को घटाने में सहायक पाया गया है।

- भारत में, श्री अन्न का सेवन आम तौर पर फलियों के साथ किया जाता है, जो प्रोटीन का परस्पर पूरक बनाता है तथा अमीनो एसिड सामग्री को बढ़ाता है, एवं प्रोटीन की समग्र पाचनशक्ति में सुधार करता है।

भारत में हाल के वर्षों में श्री अन्न का उत्पादन बढ़ रहा है। भारत श्री अन्न के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है और भारत सरकार भी अपने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के भाग के रूप में श्री अन्न के उत्पादन को बढ़ावा दे रही है। इन कारकों के परिणामस्वरूप, भारत में आने वाले वर्षों में श्री अन्न के उत्पादन में वृद्धि जारी रहने की आशा की गई है। अनुमानों के मुताबिक वर्ष 2030 तक भारत में श्री अन्न का उत्पादन तिगुना करते हुए 45 मिलियन टन तक बढ़ जाएगा।

श्री अन्न एक पौष्टिक अनाज है जिसमें फाइबर एवं आवश्यक खनिजों की उच्चतम मात्रा पाई जाती है। यह कई मायनों में गेंहू और चावल से भी बेहतर है और बाज़ार के प्रोसेस्ड फूड तो तुलना की सूची में भी नहीं आ सकते हैं। आयुर्वेद में श्री अन्न को 'तृणधान्ये' कहा गया है यानी जो जल्दी तैयार होते हैं। आयुर्वेद में इन फसलों के गुणों के बारे में विस्तार से बताया गया है। पकाने के लिए तैयार, खाने के लिए तैयार श्रेणी में श्री अन्न आधारित मूल्य वर्धित उत्पाद शहरी आबादी को आसानी से सुलभ और सुविधाजनक रूप से प्राप्त है।इन कारणों से, श्री अन्न आने वाले वर्षों में एक महत्वपूर्ण खाद्य फसल बना रहेगा। और कहा गया है न- स्वस्थ आहार, स्वस्थ जीवन अर्थात जैसा आप खाते हैं वैसे ही दिखते हैं। अतः स्वास्थ्यवर्धक आहार लें और स्वस्थ काया पाएँ। और अंत में सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए-

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः।

सर्वे सन्तु निरामयाः।।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।

मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत।।

अर्थात- सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी का जीवन मंगलमय बने और कोई भी दुःख का भागी न बने।

जय हिन्द, जय हिन्दी।

रिस्टार्ट

श्री लोकेश चंद्र लाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

तबादला या स्थानांतरण के नाम से कभी कभार खुशी मिलती है जब ये मनचाही हो। वरना अनिश्चित या अनचाही होने पर ये थोड़ा भयावह भी लगती है। नौकरी में तबादला एक सामान्य प्रक्रिया है। कुछ वर्ष एक ही स्थान पर कार्यरत् रहने के उपरांत नियुक्त / प्रतिनियुक्त व्यक्ति का स्थानांतरण होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। कई बार यह तबादला अपनी इच्छा के अनुरूप होता है तो कई बार लोगों को अपना घर-परिवार छोड़कर अनिच्छा से नए स्थान पर जाकर योगदान देना होता है। ये तबादला पदोन्नति और कुछ आर्थिक लाभ के साथ भी होता है अथवा समान पद पर रहते हुए बिना आर्थिक लाभ के भी स्थानांतरण होता है अथवा दंड स्वरूप भी तबादला होता है। कई बार एक अनुभाग से दूसरे अनुभाग, एक समन्वय से दूसरे समन्वय, एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय, एक शहर से दूसरे शहर या एक राज्य से दूसरे राज्य में स्थानांतरण होता है।

एक तरह से देखें तो स्थानांतरण, कार्य (असाइनमेंट) में परिवर्तन है। यह एक कर्मचारी का उसके कर्तव्यों, जिम्मेदारियों, आवश्यक कौशल, स्थिति और मुआवजे में कोई महत्वपूर्ण बदलाव किए बिना एक स्थान से दूसरी स्थान में जाना है। कर्मचारियों को उनकी क्षमताओं का विस्तार करने के लिए एक नौकरी से दूसरी नौकरी में स्थानांतरित किया जा सकता है। जॉब रोटेशन कर्मचारी को भविष्य में और अधिक चुनौतीपूर्ण कार्यों के लिए तैयार कर सकता है।

दिसंबर का महीना ! तबादले व पदोन्नति हेतु पात्र अभ्यर्थी ! लेकिन तबादले संबंधी आदेश जारी होने की तिथि की अनिश्चितता ! हर सुबह एक डर, दुख, खुशी व प्रतीक्षा का मिलाजुला भाव। डर : कि कहीं अनचाही जगह न मिल जाए, दुख : अपने आत्मीय (नियर एंड डियर) के लोगों से बिछड़ने का, खुशी : पदोन्नति व मनचाही नई जगह जाने की खुशी तथा प्रतीक्षा : उक्त संबंधी आदेश जारी होने तथा नई जगह बसने की प्रतीक्षा।

जब किसी चाही / अनचाही चीज की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं तो उस संबंधी कोई बारीक सी ख़बर भी कलेजे को धक से करने में समर्थ होती है। 8 दिसंबर क सुबह, किसी अनिवार्य कार्य से छुट्टी पर था, दिमाग का सारा हिस्सा एकाग्र था। उसी समय फ़ोन की घंटी बजी। एक परिचित वरिष्ठ ने फ़ोन घुमाया था। ख़बर मिली कि शायद आज आदेश जारी हो जाएगा। बस ये सुनने की देर थी कि मेरी चेतना ने एकदम से करवट फेरा और कुछ

समय के लिए मैं जो कार्य में लीन था, वह विस्मृत सा हो गया। कौन सा स्थान मिला होगा? क्या-क्या करना शेष है? डू'ज़ और मोस्ट डू'ज़ की लिस्ट तो अभी तक बनाई ही नहीं। माह के अंतिम सप्ताह में आदेश जारी होने की उम्मीद थी लेकिन अभी तो प्रथम सप्ताह ही गुज़रा है।

यह मेरा दूसरा तबादला होगा। सब कहते हैं कि एक तबादले का अनुभव तो होगा ही, इतना सोचने की क्या जरुरत है? किंतु सच कहूँ तो घबराहट तो होती ही है। सरकारी आवास हो या किराए का मकान, ठीक ठाक मिलने में समय तो लगता ही है। आवास निश्चित हो जाने पर ही परिवार व साज-ओ-सामान पूरी तरह से ले जाया जा सकता है। इसमें कम से कम एक माह तो लग ही जाता है। इस अवधि में परिवार से दूर रहकर अकेले ही प्रबंध करना होता है। फिर वहाँ की सोसाइटी, वहाँ के लोग, वहाँ के वातावरण से तालमेल बैठाना पड़ता है। कहने का तात्पर्य है कि नया आशियाना फिर से बसाना पड़ता है यानि रिस्टार्ट।

दिन अपने परवान पर है। धड़कने भी तेज़ हैं। पता नहीं तबादला कहाँ होगा? मुझे याद आ रही है वो प्रासंगिक कविता। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की कविता- 'एक बूँद' -

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी,
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी
हाय क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी।

मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में,
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में।
बह गई उस काल एक ऐसी हवा
वो समन्दर ओर आई अनमनी,
एक सुन्दर सीप का मुँह था खुला
वो उसी में जा गिरी मोती बनी।

लोग यों ही हैं झिझकते सोचते
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर,
किन्तु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर।

बूँद की भांति ही मैं भी कशमकश में हूँ। प्रायः जब मनुष्य को अपना घर छोड़कर विस्तृत संसार में जाने का मौका मिलता है तो वह सोच-विचार में पड़ जाता है। अकसर घर छोड़ना उसे बूंद के समान कुछ और ही बना देता है अर्थात वह घर से बाहर निकलकर समाज में अपना विशेष स्थान बना लेता है। उपर्युक्त कविता से प्रेरणा लेते हुए ये बात मुझे राहत पहुँचा रही है कि हो सकता है कि नियति में कुछ अच्छा बदा हो। हमें किसी भी परिस्थिति में घबराना नहीं चाहिए। जो साहसी होते हैं, वे किसी भी स्थिति में नहीं घबराते और मार्ग में आने वाली हर बाधाओं को पार करते हुए अपनी मंजिल पा लेते हैं।

हृदय की धड़कन दोगुनी रफ़्तार से चल रही है। मेरे हृदय का शोर और मस्तिष्क का द्वंद्व निम्मी तक भी पहुँचा। निम्मी अपने रोजाना की दिनचर्या में व्यस्त थी। व्यस्तता के साथ-साथ निम्मी आज थोड़ी रोमांचित भी थी। क्योंकि त्योहारों के मेले लगे रहने के कारण एक अरसे के बाद उसने चिकन बनाया था। पूजा-पाठ, व्रत-नेम में तो निम्मी शत-प्रतिशत पारंपरिक स्त्री बन जाती है पर ज्यों ही रविवार दस्तक देता है, वो नॉन वेज स्पेशल डे बन जाता है। गरमागरम लेग पीस का स्वाद जिह्वा पर आने पर ही रविवार का आनंद मिल पाता है। वैसे तो निम्मी को बहुत चीजों का शौक है लेकिन जिह्वा की कुछ ज्यादा ही चटोरी है।

रसोई के बाहर एक छोटे से चूल्हे पर धीमी आँच जो अपने गरमाहट के अस्तित्व को बनाए हुए है, उसपर छोटी कढाई जो अपने आगोश में चिकन का स्वाद बढ़ा रही है। अपनी परंपरा का निर्वहन करते हुए हर पाँच मिनट के अंतराल पर निम्मी कुछ न कुछ मसालों का छिड़काव कर रही थी और बड़े ही सावधानी के साथ बार-बार पक रहे चिकन का निरीक्षण कर रही है। अत्यधिक व्यस्तता में भी निम्मी क्षण भर में मेरी आँखों में झाँककर गोते लगा लेती है और न चाहते हुए भी मेरे हृदय के हर छोटी-बड़ी समस्या को ढूँढकर बाहर निकाल ही लेती है।

तबादला एक व्यक्ति का नहीं वरन् पूरे परिवार का होता है। तबादले की बात जानकर निम्मी भी थोड़ी गंभीर सी हो गई है क्योंकि नई जगह पर हर रोज घर के बाहर तो मैं अपनी पहचान बनाने की कोशिश करता हूँ पर घर के अंदर, आस-पड़ोस में उसे अपने आप को संवारना होता है, फिट करना होता है। मैं नहीं चाहता था कि लिस्ट आउट होने से पहले निम्मी को कुछ भी बताऊँ पर हृदय की बात हृदय से कैसे छिपाऊँ। जितने स्वाद डालकर निम्मी ने खाना बनाया था उतना स्वाद आज लग नहीं रहा था। अमूमन ऐसा होता नहीं है। लेग पीस के अस्तित्व को अपनी नुकीली दाँतों से निस्तनाबूत कर स्वाद लेने वाली निम्मी ने आज उसे हाथ तक नहीं लगाया।

मेरे कहने पर बस इतना कहा कि पता नहीं मन ज़रा ठीक सा नहीं लग रहा है, बाद में खा लेंगे। पर भीतर ही भीतर मेरे अंदर जो भूचाल उठ रहा था, उसे भली-भांति सुन और समझ पा रही थी। संध्या के समय राष्ट्रीय शिल्प मेला देखने का कार्यक्रम पूर्व निर्धारित था। मेरी शौकिन निम्मी को मेला घुमने का बड़ा शौक है और उसकी खुशी ही मेरा शौक है। हम दोनों ने मन ही मन उसे अनिश्चित काल के लिए रद्द किया।

घबराहट भरे भारी मन से दूसरी पालि (सेकेंड हॉफ) में ऑफिस गया। ऑफिस के कार्यों में अपने आप को व्यस्त रखने की कोशिश कर रहा हूँ और मस्तिष्क मेरे मन को बारंबार विचलित न होने का अनौपचारिक आदेश दे रहा है। न चाहते हुए भी नज़रें मोबाइल पर जा रहीं हैं कि कहीं कुछ ख़बर तो नहीं आई। अचानक से बजी घंटी ने धड़कन की गति को बढ़ा दिया। मोबाइल देखा तो निम्मी का फ़ोन है। वह मुझसे उसी ख़बर के बारे में पूछ रही है जिसकी मैं भी प्रतीक्षारत हूँ। बेचैनी उसकी भी आवाज़ में स्पष्ट है। हम दोनों एक ही डाली पर बैठे मुसाफ़िर हैं जो किसी और पेड़ की डाल पर जाने के लिए तैयार हैं।

इन चंद घंटों में हमने अपने सामानों की मानसिक पैकिंग भी कर ली है। कौन-कौन सी अत्यावश्यक चीजें पहले चरण में ले जानी हैं। ठंड का समय है तो पहले चरण में गर्म कपड़े पैक करने होंगे। परी के स्कूल में भी बात करनी होगी। उनको भी बताना पड़ेगा कि परी यह सेशन इस स्कूल में शायद पूरा न कर पाए। वार्षिक परीक्षा का क्या होगा, यह उस समय निर्णय लेंगे। परी अपने सहपाठियों व शिक्षकों के साथ स्कूली वातावरण में बहुत अच्छे तरीके से ढल गई है। आज भी मुझे याद है कि परी के स्कूल का पहले दिन मैं और निम्मी कितने डरे-सहमे से थे। क्या परी पाँच मिनट भी हमसे दूर रह पाएगी। ढाई साल की बेहद चंचल परी एक जगह टिकती ही न थी। अनुशासन के भवन में अपने आप को कैसे ढाल पाएगी। सदैव मम्मी के हाथों निवाला खाने वाली परी टिफ़िन कैसे खाएगी? ऐसे कई सवाल हम दोनों के ज़हन में घूम रहे थे जिनका जवाब परी ने पूरे दिन को सफल करके दिया। पहले ही दिन से परी को उसका स्कूल पसंद आया और धीरे-धीरे स्कूली वातावरण में रंगती चली गई। नई जगह, नया वातावरण, नया स्कूल कैसा होगा? ये सवाल मुझे कचोटने लगे। वैसे किसी स्थान, वातावरण और लोग को अपना बनाने की कला मुझे आती है पर इन सबमें सबसे जो आवश्यक चीज है वह है समय। समय सब ठीक कर देता है। जिन्हें मैंने यहाँ अपना बनाया है, उनसे बिछड़ने का दुख भी होगा पर यादें तो साथ होगीं। और आज के समय में लोग दूर कहाँ होते हैं। यदि हृदय साफ है तो बस एक क्लिक में आप एक-दूसरे को देखते हुए बातें कर सकते हैं।

फिर फ़ोन की घंटी बजी। मैं सतर्क हो गया। इस बार उसी परिचित वरिष्ठ का फ़ोन है। 'आज आदेश जारी नहीं हो रहा है, शायद माह के अंत में हो' उन्होंने कहा। ऐसा लगा जैसे दौड़ते रक्त के आवेग में अचानक से शिथिलता आ गई। बहुत सारी अनिश्चितताएँ समाप्त हो गईं। उथल-पुथल जीवन अचानक शांत होने लगा। निम्मी को फ़ोन लगाया, स्थिति से अवगत कराया और राष्ट्रीय शिल्प मेला देखने जाने के लिए उसे तैयार होने को कहा। सजने-संवरने की शौकिन निम्मी के अंदर एक नई ऊर्जा उत्पन्न हो गई। हारकर जीतना मैंने अपनी असफलताओं से ही सीखा है। व्यक्ति में अगर हौसला हो तो वह हर बंद रास्ते के पास एक नई राह खोज ही लेते है। हमने जीवन की गाड़ी को फिर से शुरु किया यानि रिस्टार्ट किया।

अलडोना

(यात्रा स्मृति)

श्री प्रशान्त कुमार सिंह
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

तिरे लबों को मिली है शगुफ़्तगी गुल की
हमारी आँख के हिस्से में झरने आए हैं॥

लौटते हुए बादलों से थोड़ी नमी मांग लो, खिलखिलाते फूलों से हंसी मांग लो। जीवन को तरल-सरल बनाने की यही पद्धति है।

अपने सुदीर्घ गोवा प्रवास के दौरान जब शहरों से उकताकर मैं गाँवों की तवाफ़ को निकलता था तो 'अलडोना' मेरी शाश्वत शरण स्थली थी। ऐसे ही एक तवाफ़ पर गोथिक वास्तु शैली में निर्मित एक पुराने परित्यक्त पुर्तगाली बंगले से झाँकते ये फूल दिखे और मैंने ये सुंदर सी तस्वीर उतार ली।

गोवा गोवा की रट लगाने वाले घुमक्कड़ो - यदि बागा कलंगुट अंजुना अरपोरा, आरमबुल के धूम धड़क्का और टीटो'ज़ लेन के नैन-मटक्का से मन भर गया हो तो कभी अलडोना चले आओ। ये मेरे सपनों का गाँव है। संपन्न आर्थिकी युक्त ईसाई बहुल मगर रियली सेक्युलर और सर्व समावेशी इस गाँव में निसर्ग की देवी स्वयं विराजती हैं। पत्तियों का किसलय, खग मृग का कलरव, निर्झर की रवानी और सरिताओं की जवानी का फ़ुल पैकेज यहां एक साथ मिलता है।

इस गाँव से मेरा परिचय आकस्मिक परिस्थितियों में हुआ। हुआ यूँ कि एक बार मेरी वरिष्ठ अधिकारी मैडम तबीयत नासाज़ होने की वजह से ऑफिस नहीं आई। एक अत्यंत महत्वपूर्ण रिपोर्ट उसी दिन मुख्यालय, नई दिल्ली को जानी थी जिसपर उनका साइन चाहिए था। उच्चाधिकारी ने आदेश दिया कि मैडम के घर चले जाओ और हस्ताक्षर ले आओ। इस तरह यहां पहली बार मेरा जाना हुआ और फिर तो दस्तूर बन गया। मैं यहां की नैसर्गिक सुंदरता पर मोहित हो उठा था। मैडम से सांठ-गांठ शुरू की। रथ चला, परस्पर बात चली, शम-दम की टेढ़ी घात चली...।

मैडम पुराने जमाने की सरकारी अधिकारी थी। फाइलों पर खतरनाक इंग्लिश और बमुश्किल समझ आने वाली ओल्ड लैटिन में धुआंधार नोटिंग/ड्राफ्टिंग करती थीं मगर कम्प्युटर का ज्ञान उन्हें नहीं था। कम्प्युटर देखते ही झुँझला उठती थी। प्रिंट करने के लिए भी मुझे बुला लेती। ऐसे छोटे-छोटे काम जो उनको मुश्किल लगते उन्हें मैं चुटकियों में हल कर देता। इसका परिणाम ये हुआ कि वो मुझे बड़ा एक्सपर्ट समझने लगीं और मेरी छोटी मोटी गलतियों/शरारतों को नज़रअंदाज़ कर देतीं। यहीं से मैं उनके करीब आता चला गया।

मैडम एक वयोवृद्ध ईसाई महिला थीं जिनके रिटायरमेंट में कुछ ही साल बाकी थे। स्वभाव से धर्मनिष्ठ कैथॉलिक क्रिश्चियन। जवानी में ही विधवा हो गईं फिर दूसरी शादी नहीं की। अब अपने बड़े से बंगले में अकेले रहती थी। आगे एक लॉन था जिसमें उनका बूढ़ा कुत्ता किसी समाधिस्थ की तरह चुपचाप एक ही जगह पर बैठा रहता। बंगले के पिछले हिस्से यानी बैकयार्ड में एक बड़ा सा गार्डन था जिसमें आम, काजू, कटहल और साल के पेड़ थे जिनपर पक्षियों का डेरा लगता। पेड़ों के नीचे नाना प्रकार के रंग-बिरंगे फूल लगे थे जिनकी लताएँ बाउंड्री वॉल को आच्छादित करती थीं और बाउंड्री वॉल के समानांतर किनारों पर एक व्यवस्थित घुमावदार कतार में नारियल के पेड़ लगाए गए थे। कोंकण की घनघोर बारिश और बरसों से पुताई न होने के कारण बाउंड्री वॉल पर हरी काई जम गई थी। बैकयार्ड से बाहर निकलने के लिए एक छोटा जंग लगा हुआ लोहे का गेट था। गेट से निकल कर चार-पाँच सीढ़ी उतरने पर किसी छोटी ट्रिब्यूटरी की एक पतली सी जलधारा बहती। उनकी इस अकूत चल-अचल संपत्ति का इकलौता वारिस उनका बेटा पढ़ाई के सिलसिले में विदेश रहता था और साल में एक बार क्रिसमस मनाने गोवा आता था।

शनिवार और रविवार की छुट्टी के दिन मैं वहां जाया करने लगा। उनका ज़्यादातर समय अपने गार्डन को सँवारने, चर्च की सहेलियों से गप्प मारने या कोई काम न होने पर चुपचाप किताबें पढ़ने में गुजरता था। मैं उनके छिटपुट घरेलू कामों में हेल्प किया करता। कभी बाज़ार से सब्जी ला दी, कभी मेडिकल से दवा ला दी, कभी

बीमार हैं तो उनके फूलों में पानी डाल दिया। बदले में वो मुझे पैनकेक, बेबिंका, चिकन ज़ाकुती, कैफ़रील, सोरपोतेल, विंडालू और जाने क्या क्या खिलाती रहतीं...।

बूढ़े लोगों को बात करने के लिए कोई चाहिए होता है। मैडम फ़ुरसत के क्षणों में अपने बगीचे को संवारते हुए मुझे जीवन और ऑफिस का सार-असार समझाती- हमेशा टाइम से ऑफिस आओ और टाइम से घर जाओ। काम का ज्यादा प्रेसर मत लो। ऑफिस का काम कभी खतम नहीं होता है। एक खतम होगा तो दूसरा आ जाएगा। ये कभी न समाप्त होने वाला एक सातत्य है। कभी उच्चाधिकारियों से बहस मत करो। अधिकारी को किसी काम के लिए ना मत करो। न आता हो तो किसी से पूछ कर करो। चाहे गलत ही करो मगर एक ड्राफ़्ट ज़रूर तैयार कर के उनके सामने प्रस्तुत कर दो। वो तुम्हारी ग़लतियों से इतना नाराज़ कभी नहीं होते जितना तुम्हारे इनकार और अकर्मण्यता से। बल्कि तुम्हारी ग़लतियाँ ठीक करने में उन्हें आनंद आता है क्योंकि इससे उनके सर्वज्ञाता होने का भाव पुष्ट होता है। मैं ध्यान से उनकी बातें सुनता रहता।

ग्रैजुएशन के लास्ट ईयर में ही जब मैं जोशीला युवक हुआ करता था, मेरी नौकरी लग गई थी, इसलिए कॉलेज लाइफ की खुमारी पूरी तरह उतरी नहीं थी। मैं कभी टाइम से ऑफिस ना आने के लिए कुख्यात था और अपने सेक्शन इंचार्ज रहे कई इम्मीडिएट सीनियर्स से बहसबाजी के दौरान तू-तड़ाक कर चुका था। मेरा विद्रोही स्वभाव यम, नियम, शासन, अनुशासन में ज़्यादा बिलीव नहीं करता था। लेकिन उनकी एक बात मुझे याद रह गई जो वो अक्सर कहती थी- Listen my child. If there isn't any discipline, how can there be a true realization of an ideal? उनके पास ऐसी कई धाकड़ पंचलाइनें थीं जिन्हे बोलकर वो तो अपने काम में लग जाती मगर मैं निरुत्तर होकर विचारों में डूब जाता।

अकेले में चिरंतन चिंतन करने के लिए मेरा फेवरिट स्पॉट बंगले के पीछे स्ट्रीम का किनारा था। इस स्ट्रीम के किनारे मैंने कई शामें गुज़ारी। मौसम के कई रूप देखे। करम की छाँव देखी, तग़ाफ़ुल के धूप देखे। बरसात के दिनों में ये फूलकर बलवती हो जाती और इसके किनारे बाउंड्री वॉल को छूने लगते, तो गर्मियों में सूख कर तन्वंगी। पतझड़ की ख़ामोश शामों में जब चारों तरफ नितांत 'येलोनेस' छा जाता, तब सूरज ढलने के बाद सुर्ख़ फूल और ज़र्द पत्ते नीचे गिरकर मद्धिम लहरों पे तरंगायित होकर बहते हुए चंद्रमा की मिथकीय रौशनी में एक रहस्य निर्मित करते...

समय बीता... मैडम रिटायर हो गईं। मेरा उधर जाना भी कम हुआ।यायावरी का दायरा और विस्तृत हुआ। अनछुए गंतव्यों की तलाश में नई-नई जगहों पर भटकता रहा। कभी अर्श पर, कभी फर्श पर, कभी उनके दर कभी दर-बदर...। गति और ठहराव के इस संतुलन में पाँच वर्ष निकल गए।

एक दुपहरी मैं लंच के लिए घर कमरे पर आया हुआ था कि तभी सहकर्मी का फोन आया। उसके कहा- बधाई हो। मैंने पूछा- क्या हुआ ? उत्तर मिला- तुम्हारा ट्रांसफर लेटर आ गया। मैंने पूछा- किधर का ? उसने कहा- योर होम-टाउन। ये सुनते ही एकदम से मन में विचारों का उफान शुरू हो गया। समझ नहीं आ रहा था खुश हूँ या दुखी हूँ। पहले सोचता था- कब यहाँ से निकलूँगा ?कब अपने घर जाने को मिलेगा ?हे भगवान- जल्दी ट्रांसफर करा

दो। मगर अब जब वो दिन आ गया तो समझ नहीं आ रहा था क्या करूँ। चुपचाप बैठे देर तक सोचता रहा। बीते पाँच वर्षों के खयाल में डूब गया। अप्रैल की वह तेज धूप वाली दुपहरी जब यहाँ पहली बार आया था। ऑफिस का पहला दिन। गोवा के विश्व-विख्यात समुद्री तटों का पहला नज़ारा। कोंकण की पहली बारिश- जो एक बार शुरू हो जाए तो सीजन खतम होने पर ही रुकती है। इतनी बारिश कि हम जैसे मैदानी इलाकों में रहने वाले लोग अवसाद में चले जाएँ।

अगले कुछ दिन मैं रोज शाम को तट पे चला जाता। भीड़-भाड़ से हट कर एक कोने में थोड़ी ऊंची चट्टान पर बैठकर लाल सूरज को नीले समंदर में डूबते देखता रहता। ऊपर हवाई जहाज गुजरते रहते। मुझे अपने पुराने दिन याद आते। मैं और मेरा एक दोस्त अक्सर इसी चट्टान पे बैठ कर ऊपर से गुजरते हवाई जहाजों को देखकर सोचते थे- एक दिन हम भी अपना बोरिया-बिस्तर समेट कर इसी तरह यहाँ से उड़ जाएंगे।

कार्यालय का आखिरी दिन भी पूरा हुआ। अगले दिन दोपहर एक बजे मेरी फ्लाइट थी।ठीक सुबह दस बजे अपने टैक्सी ड्राईवर के साथ मैं एयरपोर्ट की तरफ निकल पड़ा। रास्ते में ड्राईवर से कहा- ज़रा अलडोना की तरफ मोड़ लेना। एक बार अपनी बिखरी यादें समेट लूँ। बाग-बगीचे, नदी-नाले, पुल घूमते हुए जब मैडम के घर पहुंचा तो वो अपना नाश्ता तैयार कर रहीं थी। अचानक मुझे देख कर चौंक पड़ी। फिर थोड़ा ठहर कर बोली- इतने दिनों बाद मेरी याद आई ? मैंने झेंपते हुए कहा- याद तो आती थी मगर इधर आना नहीं हुआ। बात-चीत शुरू हुई-

मैडम-'इतना बन-ठन के कहां जा रहे हो ?

मैं- घर

मैडम- कितने दिन की छुट्टी है ? घर से क्या लेकर आओगे ?

मैं- अब नहीं आऊँगा। हमेशा के लिए जा रहा हूँ।

मैडम- क्या... ये कब हुआ ?

मैं- ट्रांसफर हो गया मेरा। मुख्यालय से लेटर आया था। इलाहाबाद जा रहा हूँ।

ये सुन कर पहले तो कुछ देर शून्य में देखती रहीं फिर बोली- अच्छा है। अच्छा है। तुम अपने घर चले जाओगे। तुम भी तो यही चाहते थे न ?

मैंने सिर झुकाकर धीरे से कहा- हाँ

उन्होने कहा- बैठो, कुछ नाश्ता कर लो। मैंने कहा- नहीं, लेट हो जाएगा, फ्लाइट मिस हो जाएगी। उन्होने मुस्कुराते हुए तंज़ किया- अब तो घर जाने की जल्दी है। अब कहाँ रुकने वाले हो तुम...। चलो तुम्हें गेट तक छोड़ देती हूँ।

कार में बैठकर मैंने बाय-बाय किया। गाड़ी जैसे ही आगे बढ़ने को हुई कि उन्होंने मुझे रुकने का इशारा किया और अंदर चली गईं। लौटी तो उनके हाथ में कागज़ में लिपटा हुआ एक चौकोर सा पैकेट था। मुझे देते हुए बोली- ले जाओ, अब मेरे काम की नहीं है। मैंने पैकेट लेकर पिछली सीट पर रखा और गाड़ी एयरपोर्ट की तरफ़ चल दी। पता नहीं क्यों मेरा दिल भारी हो रहा था। पीछे मुड़कर देखा तो वो गेट के सहारे खड़ी कार को जाते हुए देख रही थी...।

तय समय पर फ्लाइट ने टेक ऑफ किया। मैं पैकेट निकाल कर टटोलने लगा। किताब जैसी चीज मालूम हो रही थी। खोलकर देखा तो गोवा के सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास पर सुंदर और प्रामाणिक किताबें लिखने वाली मशहूर लेखिका और उनकी बचपन की सहेली 'मारिया अरोरा काउटो' की किताबें थीं। कुछ पन्ने उलट-पुलट के मैंने किताब वापस रख दी। विचारों के उथल-पुथल में कुछ पढ़ने का मन नहीं हो रहा था। विंडो से बाहर देखा तो आकाश में चमकीली धूप खिली थी। बादलों के सफ़ेद टुकड़े गुजर रहे थे। नीचे शांत समंदर पर पड़ती सूरज की रश्मियाँ दिन को खुशगवार बना रही थी। पीले रेत पर पर्यटकों का हुजूम उमड़ा हुआ था और मेरी आँखें इस हुजूम के बीच उस चट्टान को तलाश रहीं थीं...।

संस्मरण (रेडियो)

श्री शशांक त्रिवेदी
लेखाकार

कभी कभार कुछ चीजें लंबे समय बाद देखने को मिलें तो पुरानी स्मृतियाँ जीवंत हो जाती हैं। विज्ञान और तकनीक रोज ही अपने आविष्कारों को पहले से बेहतर रूप में विस्थापित कर देती है। रेडियो से मेरी बहुत सी खट्टी, मीठी और कड़वी यादें जुड़ी हैं। 6-7 बरस का था तब से ही क्रिकेट का शौकीन रहा। गाँव में चाचा, बाबा सब क्रिकेट के बड़े रसिक थे। पाकिस्तान से कोई मैच होता तो सब लोग अपने कामों से फ़ारिग होकर श्वेत-श्याम टीवी के सामने बैठ जाते। गाँव में लाइट आती नहीं थी इसलिए ट्रैक्टर की बैटरी निकाल कर पावर कनेक्शन वहीं से लिया जाता। सिग्नल ढूंढने में कुछ लोग सिद्धहस्त थे। वे एंटीना घुमाते और झिलमिलाती हुई स्क्रीन पर "सत्यम शिवम सुंदरम" की पट्टिका लगाए दूरदर्शन का लोगो प्रकट हो जाता।

बहरहाल, हमारा मसअला रेडियो है। बड़ी दिलचस्प कहानी है मुझे पहली बार रेडियो दिलवाए जाने के पीछे। रेडियो लेने के पीछे मेरी मंशा सिर्फ़ क्रिकेट की कमेंट्री सुनना थी। चौराहे पर एक पान के खोखे के स्वामी रेडियो रखते थे। वे भी क्रिकेट के शौकीन थे। जब भी कभी भारत का एकदिवसीय मैच होता और उसका प्रसारण आकाशवाणी पर होता तो मैं अपने तीन-चार दोस्तों के साथ वहीं बैठा रहता था। इस चक्कर में हमें कई बार उनकी झिड़कियाँ भी सुननी पड़तीं। एक दिन मैंने दृढ़ निश्चय किया कि अब मुझे रेडियो खरीदना ही है। तब आर्थिक रूप से पूर्णरूपेण परिवार पर ही निर्भर था। साल 2005 था शायद। मैंने घर पर अपनी बात रखी कि मुझे रेडियो चाहिए। प्रस्ताव अस्वीकार हुआ। मुझे थोड़ी सी डाँट भी मिली। भाइयों ने दाँत चियारे, मैं खिसियाकर रह गया।

फिर एक दिन मैंने सुअवसर जान रेडियो लेने के लिए मोर्चा खोल दिया।

बाल्यावस्था में 'अनशन' शब्द से अनभिज्ञ था लेकिन ये चेतना तब भी थी कि घर वालों को ऐसे मनाया जा सकता है। खाना-पीना बंद। स्कूल जाने के लिए घर से निकलता, राह में एक बाग में बैठा रहता। मास्टर ने घर पर दूसरे बच्चों के जरिये शिकायत पहुंचाई। घर पर जी भर कर कूटा गया। मैं अपने प्रस्ताव पर अडिग था। जब तक रेडियो नहीं मिलता मैं कुछ नहीं करने वाला।

थक-हार कर किसी अच्छे दिन मेरे लिए चमचमाता हुआ नया पैरामाउंट का रेडियो खरीदा गया। मैं निश्चित तौर पर उस दिन दुनिया का सबसे खुश लड़का था।

अब मेरी नींद सुबह आकाशवाणी के लखनऊ केंद्र के खुलने के साथ ही खुलती थी। फिर भक्ति संगीत का कार्यक्रम 'आराधना' प्रसारित होता जिसमें अनुराधा पौण्डवाल, सुरेश वाडेकर, अनूप जलोटा इत्यादि अपने गायन से भक्ति रस में सराबोर कर देते। संगीतमय रामायण का प्रसारण होता। फिर कोई डॉक्टर साहब देशी नुस्खे बताते। आकाशवाणी के गोरखपुर केंद्र से प्रादेशिक समाचारों का बुलेटिन प्रसारित होता। आकाशवाणी दिल्ली से देश भर के समाचार प्रसारित होते। प्रायोजित कार्यक्रम 'चुलबुली है चुलबुली' और 'टाइड नैचुरल्स का मौका, कड़क सफेदी से हर कोई चौंका' मैं कभी भी नहीं छोड़ सकता था। मध्यावकाश के बाद अपराह्न में आकाशवाणी लखनऊ से पुनः कार्यक्रम प्रसारित होने लगते। फिर 'जवानों के लिए', 'युववाणी' विविध भारती पर यूनिस खान की मधुर आवाज के संचालन में 'हैलो फरमाइश', ममता शर्मा की मेजबानी में 'सखी सहेली' चलते रहते।

स्कूल से आने के बाद जानवर चराने चला जाता। एक हाथ में रेडियो पकड़े और कंधे पर छोटी सी लाठी टिकाए खेतों की पगडंडियों पर पशुओं को हाँकते हुए चला जाता। मेरे क्रिकेट प्रेमी दोस्त भी साथ ही रहते। जब भी क्रिकेट मैच होता हम लोग पूरे मनोयोग से कान लगाकर बैठ जाते।

आकाशवाणी पर उद्घोषणा होती

"ये आकाशवाणी है। अब हम आपको लिए चलते हैं सीधे जयपुर जहाँ भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच दूसरे एकदिवसीय मैच का आँखों देखा हाल सुनवाएँगे।

हिंदी में हमारे कमेंटेटर हैं विनीत गर्ग और अंग्रेजी में सुरेश सरैय्या।"

मैच से पहले कार्यक्रम 'अनुमानों के आईने' में एक संचालक और दो क्रिकेट विशेषज्ञ मौजूद रहते। संभवतः हरपाल सिंह बेदी और रोबिन सिंह जूनियर। लोग फोन करके मैच के बारे में अपनी राय देते।

हिंदी में कमेंट्री शुरू होती।

"नमस्कार ! जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम से मैं विनीत गर्ग अपने साथी सुरेश सरैय्या, स्कोरर और स्टेटिस्टिसियन के साथ आपका स्वागत करता हूँ। मैदान पर गुलाबी धूप खिली हुई है। वीरेंद्र सहवाग और गौतम गंभीर की जोड़ी बीच मैदान पर आ चुकी है।"

और हम लोग उछल पड़ते। कितना सुखद एहसास था ये। 2007 का t20 विश्वकप का प्रसारण रेडियो पर नहीं हुआ तो बड़ी हताशा हुई थी। उसके बाद से कितने ही मैच टेलीविजन पर देखे लेकिन वैसा आनंद कभी नहीं आया। रात में एफएम पर गाने सुनते सुनते नींद आ जाती और अगर अर्धरात्रि में नींद नहीं खुलती तो रेडियो सारी रात बजता रहता। एक बार रेडियो खराब हुआ तो मैंने अपने एक दोस्त के साथ मिलकर उसे खोला और सही कर लिया। अब जहाँ भी पुराने रेडियो की प्लेट देखता, मैं तुरन्त उसे ले आता और पुराने स्पीकर जोड़कर बजाने का प्रयास करता।

हम 90 के दशक के आख़िर में जन्में बच्चों के लिए ये सुनहरी यादें हैं। एक विरासत जो हम आगे की पीढ़ियों को नहीं सौंप सकेंगे क्योंकि उनके पास मनोरंजन के बेहतर विकल्प हैं। उन्हें क्या पता कि रेडियो सुनने का आनंद दीवार से सटी चौड़ी एलईडी देखने के मजे पर कहीं भारी पड़ता था।

कार्यालय में तनाव प्रबंधन

श्री शशांक शेखर
सहायक लेखाधिकारी

तनाव प्रबंधन का मुद्दा जितना रोचक है उतना ही आवश्यक एवं महत्वपूर्ण भी हैI इस लेख में ऐसे सरकारी कार्यालय जो सचिवालयी, मंत्रालयी अथवा निदेशालयी प्रकृति के हैं अर्थात फील्ड वर्क बहुत कम अथवा नगण्य है, फाइलों से ही वार्तालाप करना है; को संदर्भित किया गया है क्योंकि यहाँ 'बोरडम' एवं तनाव अधिक देखने को मिलता हैI इस विषय पर हम सामान्य समझ, आवश्यकता, कारण, निवारण के सुझाव एवं अस्वीकरण बिन्दुओं को संबोधित करते हुए एवं रोचकता का पुट डालने एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) उपकरण के प्रयोग की सम्भावना को ख़ारिज करने हेतु लेख में थोड़ी सामान्य और अनौपचारिक भाषा-शैली का प्रयोग करते हुए चर्चा करेंगे I

'कार्यालय में तनाव प्रबंधन' विषय पर बात करने से पूर्व यह समीचीन प्रतीत होता है कि 'तनाव' पर कुछ बात की जाय I मेरी समझ में तनाव एक व्यक्तिनिष्ठ स्थिति है; किसी व्यक्ति को किसी ऐसे कार्य या विचार से तनाव हो सकता है जिसे दूसरा व्यक्ति आनंद के साथ निष्पादित करेI इस सबंध में सामान्य धारणा यह हो सकती है कि किसी व्यक्ति के सन्दर्भ में उसकी सहजता से विचलन तनाव की स्थिति हैI चूँकि यहाँ पर बात कार्यालय में तनाव की हो रही है इसलिए सामान्य कार्यालयी कार्य निष्पादन से सहजता को सम्बद्ध करना उचित नहीं है; आशय यह है कि यदि कोई व्यक्ति (कर्मचारी/अधिकारी) कार्यालयी कार्य को ही उसकी सहजता से विचलन माने तो उसे कामचोरी की भावना से ग्रसित ही कहा जायेगा न कि तनाव से I

कार्यालय में तनाव प्रबंधन की आवश्यकता के व्यक्तिगत पहलु पर यदि विचार करें तो सब से पहले यह बात जहन में आती है कि व्यक्ति अपने दैनिक जीवन का लगभग एक तिहाई भाग कार्यालय में व्यतीत करता है एवं उस एक तिहाई भाग का असर उसके दिन के शेष भाग पर पड़ता हैI कार्यालयी दृष्टिकोण से सोचें तो यदि व्यक्ति तनाव में रहता है तो उसकी उत्पादकता, निर्णयन क्षमता, ध्यानकेन्द्रण क्षमता, कार्यक्षमता, संचार शैली प्रभावित होती हैI संचार शैली प्रभावित होने का व्यंगात्मक तौर पर मतलब यह भी है कि यदि व्यक्ति तनाव में है तो दूसरों को भी तनाव देगाI कार्यस्थल पर संघर्ष की संभावनाएं भी दृष्टिगत हो सकती हैI लम्बे समय तक तनाव में रहने से व्यक्ति को एंग्जायटी, डिप्रेशन, नींद की कमी एवं अन्य साइकोसोमैटिक व सोमैटिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं संभावित हैI कार्यजीवन संतुलन का बिगड़ना भी महत्वपूर्ण पहलू हैI इस प्रकार कुछ-कुछ

कारण देकर हमने ऐसा सिद्ध करने का लगभग सफल प्रयास कर लिया है कि मुद्दा महत्वपूर्ण है एवं इस पर बात करना भी अवश्यम्भावी हैI

इतनी चर्चा के उपरांत अब समय है कार्यालय में तनाव के उन कारणों को चिन्हित करना जो समस्या की जड़ है। सबसे पहला एवं आम कारण है 'वर्कलोड'। जहाँ एक ओर बीते दिनों बहाली की तुलना में सेवानिवृत्ति ज्यादा हुई है वहीं दूसरी ओर कार्य निष्पादन की प्रकृति प्रोद्योगिकी उन्मुख होने से काफी कर्मचारी अपनी कार्यक्षमता का पूर्ण प्रयोग नहीं कर पाते हैं जिस कारण वर्कलोड के असामान्य वितरण की समस्या भी दृष्टिगत होती हैI कार्यालय में पर्यवेक्षक वर्ग एवं कार्यालय प्रमुख स्तर के अधिकारियों से अपेक्षित समर्थन एवं सुसंगत पृष्ठपोषण अथवा सराहना प्राप्त न होना भी तनाव का एक कारण हो सकता हैI विलंबित प्रोन्नति, अनम्य एवं कठोर समय सीमाओं वाले लक्ष्य, पारिवारिक समस्याएं, आपसी संघर्ष एवं कार्यालय का असहज वातावरण कुछ ऐसे अन्य कारण हो सकते हैं जिस से कार्यालय में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जायेI

तनाव के निवारण सम्बन्धी सुझावों को उक्त कारणों के सापेक्ष; निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से व्यक्त किया गया है जिन्हें नियोक्ता एवं कर्मचारी अपने-अपने स्तर से यथासंभव व्यवहार्य अपना सकते हैं:-

1. <u>तर्कसंगत कार्य वितरण-</u> पर्यवेक्षक समूह को कर्मचारियों के मध्य कार्य को तर्कसंगत रूप से क्षमताओं के दृष्टिगत वितरित करना चाहिएI समय-समय पर उचित प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की जानी चाहिएI ऐसे अनम्य एवं कठोर समय सीमाओं वाले लक्ष्य नहीं दिए जाने चाहिए जो कि व्यवहारिक न होंI

2. तनाव प्रबंधन सम्बन्धी प्रशिक्षण सेशन- ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था समय- समय पर कार्यालय द्वारा की जानी चाहिए जो कर्मचारी/अधिकारी को कार्यस्थल की विपरीत परिस्थितियों से डील करना एवं तनाव प्रबंधन सिखाएंI

3. कार्य करने का सहज वातावरण- कार्यालय का माहौल सहज होना चाहिए जिससे सभी कर्मचारी अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग कर सकेंI शोर-गुल कम होना चाहिए, प्रकाश, आरामदायक फर्नीचर एवं वेंटिलेशन की उचित व्यवस्था होनी चाहिएI

4. समयबद्ध प्रोन्नति एवं अन्य सेवालाभ प्रदान किया जाना- यदि कर्मचारी एक ही वेतन स्तर पर बिना प्रोन्नति लम्बे समय तक काम करते हैं तो उनमे एक कुंठा की भावना उत्पन्न होना स्वाभाविक है एवं यही भावना धीरे-धीरे कार्य स्थल डिप्रेशन का रूप ले लेती है I अतः उच्च प्रबंधन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी कर्मचारियों को ससमय प्रोन्नति एवं अन्य सेवालाभ प्राप्त हो जिससे वे उत्साहित एवं उर्जावान बने रहते हुए कार्य करेंI

5. कार्य-जीवन संतुलन- यदि कर्मचारी अपने कार्य एवं व्यक्तिगत जीवन में संतुलन स्थापित कर लेता है तो यह अच्छा जीवन निर्वाह करने की बेहतर शैली साबित होती हैI अतः उच्च प्रबंधन द्वारा ऐसे सम्यक प्रयास किये जाने चाहिए कि सभी कर्मचारी/अधिकारी एवं स्वयं उच्च प्रबंधन में शामिल व्यक्ति अपने कार्य एवं व्यक्तिगत जीवन में संतुलन स्थापित कर सकेंI

6. नियमित योग एवं व्यायाम- प्रत्येक व्यक्ति को नियमित योग एवं व्यायाम करना चाहिएI कार्यालय स्तर पर योग एवं व्यायाम के जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर किया जाना चाहिएI

7. लम्बे समय तक लगातार बैठने से बचना- सामान्य कार्य के दौरान एक-दो घंटे में 5 मिनट वाक करना चाहिए जिससे पोस्चर सम्बन्धी समस्या न होI

8. मनोरंजन क्लब की व्यवस्था- प्रत्येक कार्यालय में यथासंभव मनोरंजन क्लब की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कर्मचारी विभिन्न एक्टिविटी एवं इनडोर खेलो में प्रतिभाग करें एवं केवल कार्य के तनाव में दबे न रहेंI

9. कार्य के अतिरिक्त अन्य कार्यालयी आयोजनों में प्रतिभाग- कार्य के अतिरिक्त कर्मचारियों को चाहिए कि वे विभिन्न अंतरा कार्यालयी एवं अंतर कार्यालयी प्रतियोगिताओं/आयोजनों में हिस्सा लेंI

10. संवेदनशीलता- संवेदनशीलता की किसी भी समूह में एक महत्वपूर्ण भूमिका होती हैI कार्यालय में महज प्रोफेशनल सम्बन्ध न बनाकर व्यक्तिगत संबंधों पर भी बल देना चाहिएI यदि कोई कर्मचारी/ अधिकारी तनाव में दिखते हैं तो अन्य सहकर्मियों का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि वे उनसे खुलकर बात करते हुए समस्या के कारण पर चर्चा करें एवं यथासंभव सहायता करने का प्रयास करेंI यदि सहायता व्यवहार्य नहीं है तो कम से कम नैतिक बल प्रदान करना चाहिए जिससे तनावग्रस्त कर्मचारी/ अधिकारी को अपने मानसिक द्वन्द का सामना करने

का साहस मिलेI पर्यवेक्षक समूह एवं उच्च प्रबंधन को भी संवेदनशीलता का परिचय देना चाहिए जिससे कार्यालय में एक सकारात्मक माहौल बन सकेI

इस प्रकार तनाव के कारणों, प्रभावों एवं निवारण के सुझावों के आधार पर बेहतर तरीके से तनाव प्रबंधन करने में सहायता मिल सकती हैI लेख के अंत की ओर बढ़ते हुए अस्वीकरण के रूप में यह भी कहना है कि ये मेरे अर्थात लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं जो कि मात्र सलाह की प्रकृति के हैं, जिनसे अन्य व्यक्ति असहमत भी हो सकते हैंI

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)

श्री अमीन अली
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

आजकल AI यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेस शब्द खूब प्रचलन में है। इंस्टाग्राम पर रील स्वाइप करते हुए भी शायद आपने ये शब्द देखा हो। हो सकता है वहां आपने AI की मदद से बनी कोई फोटो या वीडियो भी देखी हो। कभी आपने सोचा है कि फेसबुक या इंस्टाग्राम पर आप कोई वीडियो बड़े ध्यान से देखते हैं.. फिर उसके बाद वैसे ही वीडियोज आपकी फीड में लगातार कैसे दिखते रहते हैं? या फिर फ्लिपकार्ट या अमेजन पर आप कोई चीज सर्च करते हैं, भले ही वो चीज आपने खरीदी ना हो, फिर भी कैसे आपको अपने फेसबुक-इंस्टाग्राम या किसी गेम में बार-बार उसके विज्ञापन दिखने लगते हैं? ये सब AI यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की वजह से ही होता है। दरअसल, सोशल मीडिया कंपनियां AI का इस्तेमाल कर यूजर के इंटरेस्ट का पैटर्न समझती हैं और उनका डेटा इकट्ठा करती हैं। इसी डेटा का इस्तेमाल कर वो यूजर को इस तरह के विज्ञापन या फीड दिखाती हैं।

हाल ही में Chat GPT नाम का AI टूल भी काफी चर्चा में रहा। Chat GPT एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जहां आप कोई सवाल पूछते हैं तो उसका लिखित जवाब आपको मिलता है। अगर आपको किसी विषय पर 400 शब्दों का निबंध लिखना हो तो ये आपको Chat GPT तुरंत लिखकर दे देगा। बच्चे इस टूल को अपना होमवर्क करने में सबसे ज्यादा इस्तेमाल कर रहे हैं। कुछ लोग तो ये भी मानते हैं कि ये Google का रिप्लेसमेंट है। हालांकि, ये कहना अभी बहुत जल्दबाजी होगी क्योंकि Chat GPT में अभी कई खामियां हैं और आप इस पर पूरी तरह भरोसा भी नहीं कर सकते।

बहरहाल, अगर आप एंड्रॉयड स्मार्टफोन यूज करते हैं तो आपके फोन में Google Assistant भी होगा। गूगल अपने इस टूल को इतना एडवांस कर रहा है कि भविष्य में आप इसकी मदद से कई सारे जरूरी काम आसानी से कर पाएंगे। जैसे आपको किसी रेस्टोरेंट में टेबल बुक करने या डॉक्टर की अपॉइंटमेंट लेने के लिए खुद बात करने की जरूरत नहीं होगी। ये आपको Google Assistant ही कर देगा और जिस तकनीक से ये सब संभव होगा, वो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल हमारी डेली लाइफ में बहुत कॉमन हो चुका है और इसको नजरअंदाज करना लगभग नामुमकिन है। तो इसलिए ये समझना जरूरी हो जाता है कि आखिर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस है क्या और काम कैसे करता है?

परिचय

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) कंप्यूटर विज्ञान की एक एडवांस शाखा है जो मशीनों को इंसानों की तरह काम करने जैसा सक्षम बनाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो, "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक ऐसी विधि है जिसका इस्तेमाल करने पर एक कंप्यूटर, रोबोट और मशीन इंसान की तरह सोचने लगता है।" आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस दो शब्दों आर्टिफ़िशियल और इंटेलिजेंस से मिलकर बना है, जिसमें आर्टिफ़िशियल मतलब "कृत्रिम या मानव निर्मित" और इंटेलिजेंस मतलब "बुद्धिमत्ता या विचार अथवा तर्कशक्ति"। इसलिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का पूरा अर्थ हुआ "मानव द्वारा निर्मित बुद्धिमत्ता" या "कृत्रिम बुद्धिमत्ता"। आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस को मशीन इंटेलिजेंस भी कहते हैं। इसमें मशीन के अंदर इंसान की तरह सोचने और कार्य करने की क्षमता को पैदा किया जाता है जैसे कि- इंसानो की तरह बात करना, याद रखना, सीखना, निर्णय लेना और किसी समस्या को हल करना आदि। अतः कहा जा सकता है कि मशीनों द्वारा किया जाने वाला ऐसा व्यवहार, जो समय और परिस्थिति के आकलन के बाद किया जाता है, 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' कहलाता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जनक

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का जनक अमेरिका के कम्प्यूटर साइंटिस्ट जॉन मैकार्थी को माना जाता है। मैकार्थी ने 1956 में डॉर्टमाउथ कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया था। इसी कॉन्फ्रेंस में उन्होंने पहली बार AI के कॉन्सेप्ट और संभावनाओं पर चर्चा की थी। जॉन मैकार्थी के मुताबिक, AI बुद्धिमान मशीनों, विशेष रूप से बुद्धिमान कंप्यूटर प्रोग्राम को बनाने का विज्ञान और इंजीनियरिंग है.... जिसका मतलब है मशीनों द्वारा प्रदर्शित किया गया इंटेलिजेंस।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का आरंभ 1950 के दशक में ही हो गया था, लेकिन इसे पहचान 1980 के दशक की शुरुआत में मिली। जापान ने सबसे पहले इस ओर पहल की और 1981 में 'फिफ्थ जनरेशन' नामक योजना की शुरुआत की थी। इसमें सुपर-कंप्यूटर के विकास के लिये 10-वर्षीय कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी। इसके बाद अन्य देशों ने भी इस ओर ध्यान दिया। ब्रिटेन ने इसके लिए 'एल्वी' नाम का एक प्रोजेक्ट बनाया। यूरोपीय संघ के देशों ने भी 'एस्प्रिट' नाम से एक कार्यक्रम की शुरुआत की थी। इसके बाद 1983 में कुछ निजी संस्थाओं ने मिलकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर लागू होने वाली उन्नत तकनीकों, जैसे- Very Large Scale Integrated सर्किट का विकास करने के लिये एक संघ 'माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कंप्यूटर टेक्नोलॉजी' की स्थापना की।

ऑर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अनुप्रयोग

AI का इस्तेमाल बहुत सारे क्षेत्रों में किया जा रहा है, जैसे आपने Chat Bot का नाम सुना होगा। आजकल बहुत सारी कंपनियां चैट बोट का इस्तेमाल कस्टमर सपोर्ट के लिए करती हैं। चैट बोट आपको लगभग हर बैंक की ऑनलाइन सर्विस में मिल जाएगी। जब कभी आप ऑनलाइन बैंकिंग इस्तेमाल करते हैं और कोई चीज आपको ना समझ आ रही हो तो बैंक आपको तीन विकल्प देता है, पहला- आप बैंक जाकर अपनी समस्या का समाधान

कर सकते हैं; दूसरा- आप कस्टमर केयर नंबर पर बात कर सकते हैं; और तीसरा- आप ऑनलाइन कस्टमर सपोर्ट पा सकते हैं। ये तीसरा विकल्प Chat Bot का ही होता है, जहां आप अपनी समस्या चैट बॉक्स में लिखते हैं और फिर दूसरी ओर से आपको उसका समाधान दिया जाता है। दूसरी ओर से समाधान देने वाला कोई इंसान नहीं, बल्कि बैंक का AI टूल ही होता है, जिसे Chat Bot का नाम दिया गया है। ऐसे ही Chat Bot का इस्तेमाल अलग-अलग क्षेत्र की अलग-अलग कंपनियां भी करती हैं।

स्वास्थ्य क्षेत्र में AI का इस्तेमाल काफी तेजी से हो रहा है। इसका उद्देश्य उपचार की सटीकता को बढ़ाना, व्यक्तिगत उपचार को सक्षम बनाना, रोगी के परिणामों में सुधार करना, स्वास्थ्य देखभाल को सुव्यवस्थित करना तथा चिकित्सा अनुसंधान एवं नवाचार में तेज़ी लाना है। AI Algorithm का इस्तेमाल मेडिकल इमेजिंग जैसे- एक्स-रे, सीटी स्कैन, एमआरआई स्कैन में हो रहा है। इनके अलावा स्वास्थ्य से संबंधी सेवाओं में कस्टमर सर्विस चैटबोट, वर्चुअल हेल्थ असिस्टेंट, मेडिकल रिकॉर्ड के मैनेजमेंट, सर्जरी, ड्रग डिस्कवरी और डेवलपमेंट समेत कई सारी मेडिकल सेवाओं में AI बहुत उपयोगी है।

शिक्षा क्षेत्र में AI ने जबरदस्त बदलाव लाए हैं, जो छात्रों और संस्थानों दोनों के लिए फायदेमंद हैं। AI विभिन्न क्षेत्रों में लर्निंग या सीखने की क्षमताओं को पूरा करने हेतु नवीन और व्यक्तिगत दृष्टिकोणों के लिये नई संभावनाओं को तलाश सकता है।

- आईआईटी खड़गपुर ने नेशनल AI रिसोर्स प्लेटफॉर्म (NAIRP) विकसित करने के लिये अमेज़ॅन वेब सर्विसेज़ के साथ सहयोग स्थापित किया है। यह भविष्य में बेहतर टीचिंग और लर्निंग के लिये आँखों की गति, संकेत और अन्य मापदंडों की निगरानी जैसे तंत्रों का उपयोग करेगा।
- जैसा कि और Chat GPT, Bard अन्य बड़े भाषा मॉडल द्वारा प्रदर्शित किया गया है, जनरेटिव AI शिक्षकों की मदद कर सकता है और छात्रों को नवाचार में मदद कर सकता है।

व्यापार क्षेत्र में AI संचालन को अनुकूलित करने, निर्णय लेने, दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करने, ग्राहक सेवा में सुधार करने, व्यक्तिगत विपणन को सक्षम बनाने, अंतर्दृष्टि के लिये बिग डेटा का विश्लेषण करने तथा धोखाधड़ी और साइबर सुरक्षा खतरों का पता लगाने, आपूर्ति शृंखला प्रबंधन को कारगर बनाने, नवाचार एवं प्रतिस्पर्द्धा में मदद करता है।

वित्तीय क्षेत्र में AI, वित्तीय लेनदेन में फ्रॉड की जांच और रोकथाम, Algorithmic Trading, Credit Scoring और जोखिम मूल्यांकन के लिए उपयोग किया जाता है। एआई से संचालित चैटबॉट कस्टमर सेवा में तेजी से और सटीक जवाब देने के लिए इस्तेमाल होते हैं।

यातायात क्षेत्र में AI, ऑटोमैटिक वाहनों के साथ क्रांति ला रहा है। AI Algorithm नेविगेशन और यातायात प्रबंधन में मदद करते हैं।जीपीएस तकनीक उपयोगकर्ताओं को सुरक्षा बढ़ाने के लिए सटीक, समय पर और

संपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकती है। उबर और कई लॉजिस्टिक्स कंपनियां परिचालन क्षमता बढ़ाने, ट्रैफिक का आकलन करने और मार्गों को अनुकूलित करने के लिए एआई का उपयोग करती हैं।

साइबर सुरक्षा में AI जरूरत बन चुका है। साइबर सुरक्षा में एआई का इस्तेमाल नेटवर्क ट्रैफिक में पैटर्न और विसंगतियों की पहचान करने के लिए ज्यादा किया जा रहा है ताकि संभावित हमलों से बचा जा सके। ये User Authentication और धोखाधड़ी का पता लगाने में भी मदद करता है।

रक्षा क्षेत्र में AI बहुत तेजी से प्रासंगिक हो चुका है और इसमें सैन्य अभियानों के विभिन्न पहलुओं को बदलने की क्षमता है। सेना के अलग-अलग एक्सरसाइज में ऑटोमैटिक गाड़ियां, ड्रोन और रोबोट विकसित करने के लिए एआई का उपयोग किया जा रहा है। ये सिस्टम इंसानों के डायरेक्ट हस्तक्षेप के बिना सैन्य प्रशिक्षण, निगरानी, लक्ष्य प्राप्ति और यहां तक कि युद्ध संचालन जैसे कार्य भी कर सकता है।

इनके अलावा AI का इस्तेमाल रिटेल, मैन्युफैक्चरिंग जैसे क्षेत्रों में भी तेजी से हो रहा है।

<u>ऑर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के फायदे</u>

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एल्गोरिदम सटीकता के साथ बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण कर सकता है, त्रुटियों को कम कर सकता है और विभिन्न अनुप्रयोगों जैसेउपचार -, पूर्वानुमान और निर्णय लेने के दौरान सटीकता में सुधार कर सकता है।
- AI डेटाहै करता प्रदान विश्लेषण और अंतर्दृष्टि संचालित-, निहित प्रारूप, प्रवृत्तियों और संभावित जोखिमों की पहचान करके निर्णय लेने में सहायता प्रदान करता है जो मनुष्यों द्वारा आसानी से पहचानी नहीं जा सकती हैं।
- AI नई खोजों को सक्षम कर स्वास्थ्य सेवा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देता है।
- AI उपकरण और प्रणालियाँ मानव क्षमताओं में वृद्धि कर सकती हैं, जिससे विभिन्न उद्योगों और क्षेत्रों में उत्पादकता एवं उत्पादन में वृद्धि हो सकती है।
- AI प्रणाली नए डेटा और अनुभवों से सीख सकती है, लगातार अपनी क्षमता में सुधार कर सकती है, परिवर्तनों के साथ स्वयं को अनुकूलित कर सकती है, साथ ही बदलते रुझानों तथा प्रारूप के साथ अद्यतित रह सकती है।
- AI अंतरिक्ष अन्वेषण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, स्वायत्त अंतरिक्ष यान, रोबोट अन्वेषण और दूरस्थ एवं खतरनाक वातावरण में डेटा विश्लेषण को सक्षम बनाता है।

<u>ऑर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नुकसान</u>

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की एक मूलभूत सीमा यह है कि इसे बॉक्स से परे सोचने के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता है। एआई समय के साथ प्री सीख करके उपयोग का अनुभवों पूर्व और डेटा फेड- है सकता, लेकिन यह अपने दृष्टिकोण में मौलिक नहीं हो सकता है।
- मानव बुद्धि की नकल करने वाली मशीन बनाने में सक्षम होना कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। इसमें बहुत समय और प्रयास लगता है, और यह काफी महंगा हो सकता है।
- रोबोट इसका एक उदाहरण है कि कैसे कृत्रिम बुद्धि का उपयोग व्यवसायों को बदलने और बेरोजगारी पैदा करने के लिए किया जा रहा है।
- एआई सॉफ्टवेयर के एल्गोरिदम का प्रयोग कर एक मौजूदा मीडिया फाइल (फोटो, वीडियो या ऑडियो) की नकली प्रतिलिपि तैयार की जाती है जिसमें किसी व्यक्ति द्वारा बोले गए शब्दों, शरीर की गतिविधि या अभिव्यक्ति को दूसरे व्यक्ति पर इस सहजता के साथ स्थानांतरित किया जाता है कि यह पता करना बहुत ही कठिन हो जाता है कि प्रस्तुत फोटो/वीडियो डीप या है असली फेक। डीप फेक के माध्यम से किसी व्यक्ति, संस्थान, व्यवसाय और यहाँ तक कि एक लोकतांत्रिक व्यवस्था को भी कई प्रकार से क्षति पहुँचाई जा सकती है।
- नैतिकता महत्वपूर्ण मानवीय गुण हैं जिन्हें कृत्रिम बुद्धिमत्ता में शामिल करना मुश्किल हो सकता है। एआई के तेजी से विकास ने चिंता जताई है कि यह एक दिन बेकाबू हो सकता है और अंततः मानवता का सफाया कर सकता है।
- वैश्विक स्तर पर इस कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी का उपयोग करने से लोगों की निजता का हनन भी होता है क्योंकि इसके माध्यम से विभिन्न कंपनियाँ जो डाटा इकट्ठा कर रही हैं, उसका कोई भरोसा नहीं है कि वे उस डाटा का इस्तेमाल अपने कौन से हितों को पूरा करने में करेंगी। इसके अलावा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी के माध्यम से साइबर हमलों तथा साइबर धोखाधड़ी की संभावनाएँ भी बढ़ी हैं। ऐसी स्थिति में, व्यक्ति की निजता का अधिकार सुनिश्चित किया जाना अत्यंत जटिल कार्य हो गया है।

<u>भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की संभावनाएँ</u>

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भारत में शैशवावस्था में है और देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें इसे लेकर प्रयोग किये जा सकते हैं। सरकार भी चाहती है कि सुशासन के लिहाज़ से देश में जहां संभव हो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल किया जाए। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इस साल जब संसद में केंद्रीय बजट 2023-24 पेश किया तो एआई जैसी उभरती हुई तकनीक के लिए कई विकास पहलों की घोषणा की। वित्त मंत्री ने घोषणा की

कि 'AI In India' और 'Make AI work for India' के विजन को साकार करने में मदद करने के लिए, देश भर के शीर्ष शैक्षणिक संस्थानों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए तीन उत्कृष्टता केंद्र (Centre of Excellence) स्थापित किए जाएंगे। विशेषज्ञों और उद्योग जगत ने इस कदम की सराहना करते हुए कहा है कि इससे अर्थव्यवस्था और भारत के विकास को गति मिलेगी।

निष्कर्ष:

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में मानव बुद्धि से परे जाने की पूरी क्षमता है और यह किसी भी विशेष कार्य को सटीक और कुशलता से कर सकता है। इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में अपार क्षमता है। हालाँकि किसी भी चीज़ पर अधिक निर्भरता अच्छी नहीं होती है और कुछ भी पूर्ण रूप से मानव मस्तिष्क के समान नहीं हो सकता है। इसलिये आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अत्यधिक उपयोग नहीं किया जाना चाहिये क्योंकि बहुत अधिक स्वचालन और मशीनों पर निर्भरता, वर्तमान मानव जाति और आने वाली पीढ़ियों के लिये खतरनाक साबित हो सकती है।

साइबर क्राइम : भारतीय परिप्रेक्ष्य में

श्री राजीव सिंह
सहायक पर्यवेक्षक

इंटरनेट की उपयोगिता निसंदेह मानवीय जीवन में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है लेकिन इसके माध्यम से जो खतरे पारिलाक्षित हो रहे है उन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। सबसे बड़ा खतरा साइबर अपराधों के रूप में सामने आया है जो भारत के समक्ष एक बड़ी चुनौती है। वस्तुत: साइबर क्राइम एक ऐसा अपराध है जो इंटरनेट के माध्यम से कम्प्यूटर, मोबाइल या किसी ऐसे डिवाइस की सहायता से किया जाता है जिससे किसी दूसरे व्यक्ति का उत्पीड़न होता है।

वैसे तो साइबर क्राइम आज एक वैश्विक समस्या के रूप में स्थापित हो चुका है और भारत में भी इसकी जड़ें मजबूत होती चली जा रही हैं। इंटरनेट ने जहाँ एक ओर हमारी जिन्दगी को रोमांचक और आसान बना दिया है वही तमाम ऐसे खतरे भी पैदा कर दिये हैं जो घटित होते हैं तो जिदंगी को पटरी से उतरते देर नहीं लगती, यह भी सच है कि आज हम इंटरनेट के कारण एक दूसरे के इतने करीब आ गए कि हमे किसी भी जानकारी को हासिल करने में एक मिनट भी नहीं लगता। इंटरनेट ने हमारी जिन्दगी को अनुशासित करने के साथ-साथ जीने का सलीका भी सिखाया है। सम्पूर्ण विश्व में लगभग डेढ़ से दो अरब लोग इंटरनेट सेवाओं का लाभ उठा रहे हैं। इससे ध्वनित होता है कि इंटरनेट हमारे जीवन का कितना अहम हिस्सा बन चुका है।

इंटरनेट ने हमें बेशुमार सुविधाएं तो दी हैं, किन्तु इसके साथ साइबर क्राइम जैसी विचलित कर देने वाली सौगात भी दी है। इंटरनेट ने तमाम ऐसे खतरों को भी जन्म दिया है जिनसे बचने के लिए आज तमाम सुरक्षा कवच और कानूनों की जरूरत महसूस की जा रही है। भारत जैसा विकासशील देश भी इस खतरों से जूझ रहा है। भारत में साइबर अपराध की समस्या भयावह एवं विकराल रूप धारण कर चुकी है। सच मानिए तो भारत देश में साइबर अपराधों से निपटने के लिए कोई विशेष प्रावधान नहीं किए गए जैसे कि अन्य देशों में किए गए। इस समय भारत में साइबर अपराध निर्मूलन विशेषज्ञों की संख्या भी बहुत कम है। जबकि अन्य देशों में इनकी संख्या अत्याधिक है चीन जैसे देश में साइबर अपराध निर्मूलन विशेषज्ञों की संख्या विश्व में सर्वाधिक है जो रात दिन साइबर अपराधों पर नजर रखे हुए है।

यह एक आश्चर्य की बात है कि साइबर अपराध के मामले में भारत दुनियाँ में पाँचवे स्थान पर है। इसके बावजूद साइबर अपराधों की जाँच पड़ताल के लिए अभी तक भारत में कोई वैज्ञानिक व्यवस्था नहीं है जिससे

इस प्रकार के अपराधों पर अंकुश लगाया जा सके। पुलिस को जानकारी भी साइबर अपराधों को लेकर शून्य है। पिछले वर्ष साइबर अपराधियों ने करोड़ों रुपए इधर से उधर किए और न जाने कितने एटीएम इन अपराधियों की करतूतों से खाली हो गए।

साइबर अपराध समाज में होने वाले अन्य अपराधों जैसे नही। इसका मुख्य कारण यह है कि इसकी ना तो कोई भौगोलिक सीमा होती है न तो इसके प्रारूप होते है। तरह-तरह के वाइरस के जरिए साइबर सुरुक्षा कवच को नुकसान पहुँचाना साइबर अपराध जगत में इन दिनो धड़ल्ले से हो रहा है। आज किसी का चेहरा और किसी की धड़ जोड़कर मॉर्फिंग के जरिए पोनोग्राफी, पेडोफाइल (बाल यौन शोषण) से लेकर लिंग निर्धारण के अपराध भी साइबर जगत के लोकप्रिय अपराध बन चुके है। इंटरनेट के जरिए आतंकवाद को प्रोत्साहित करने की घटनाएं रोज देखने को मिल रही है। साइबर गतिविधियों के द्वारा धार्मिक राजनीतिक उन्माद पैदा करता साइबर आतंकवाद के अन्तर्गत आता है। यह किसी भी देश की आंतरिक सुरक्षा को समाप्त कर सकता है।

भारत में साइबर अपराधों की संख्या के हिसाब से जो राज्य अपना स्थान रखते हैं उनमें तेलंगाना शीर्ष स्थान पर है। जिसमें अकेले साइबर अपराधों का प्रतिशत 23.22% है अन्य पाँच शीर्ष राज्य कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश जिनमें साइबर अपराधों की संख्या का 73.70% हिस्सा है।

आज तीव्र गति से बढ़ते हुए साइबर अपराधों पर अकुंश न लगा पाना किसी एक देश की बात नहीं है यह एक वैश्विक समस्या है और इसका समाधान भी वैश्विक स्तर पर ही तलाशा जा सकता है। जहाँ तक भारत का प्रश्न है तो सरकार ने साइबर अपराधों को रोकने के लिए वर्ष 2000 मे आईटी एक्ट बनाया जो इन अपराधों

को रोकने में बहुत ज्यादा सफल नही हो पाया। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों के साथ-साथ हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी और साइबर अपराधियों से सतर्क रहना होगा। साइबर अपराधियों के चंगुल में आने से बचने के लिए इंटरनेट पर सावधानी ही सबसे बड़ी सुरक्षा है। वैसे तो इस समस्या की रोकथाम का कोई सशक्त आधार नही है लेकिन कुछ उपायों के द्वारा इससे बचा जा सकता है।

<u>रोकथाम के उपाय</u>

1. हर व्यक्ति को जागरूक होना पड़ेगा तभी इन अपराधों के चंगुल से बचा जा सकता है। इंटरनेट पर किसी से भी अपना पूरा नाम, सही पता, फोन नम्बर और बैंक खाते शेयर न करें। यदि कोई साइट किसी उपभोक्ता से रजिस्ट्रेशन के बहाने कोई सूचना या ई-मेल का पासवर्ड मांगती है तो उसे कदापि न दे।
2. उपभोक्ताओं के ई-मेल डाटा विज्ञापनदाता कम्पनियों को बेचने का धंधा तेजी से चल रहा है। ऑनलाइन शॉपिंग करें लेकिन सावधान रहें।
3. वर्तमान में हम विभिन्न Account का उपयोग करते हैं ऐसे में बहुत जरूरी है कि आप एक मजबूत पासवर्ड का उपयोग करें ताकि हम इन अपराधों से बचे रहें।
4. इंटरनेट पर दोस्ती करें लेकिन किसी लुभावने प्रस्ताव की ओर आकर्षित न हों।
5. आज कल बच्चे साइबर अपराधियों के गिरफ्त में आसानी से आ जाते हैं ऐसे में आवश्यक है कि बच्चों को इंटरनेट का प्रयोग सावधानी पूर्वक करना चाहिए तथा शापिंग के लिए सेफ सर्च मोड एवं पेरेंटस लॉक जैसे फीचर का उपयोग करना चाहिए।
6. सोशल मीडिया के उपयोग में भी सावधानी बहुत आवश्यक है क्योंकि यह साइबर अपराधियों का एक महत्वपूर्ण हाथियार बन चुका है। ऐसे में अपने सोशल मीडिया एकाउंट को लॉक प्रोफाइल मोड में रखें।
7. अज्ञात लिंक पर क्लिक न करें क्योंकि इससे आसानी से लोग ठगी का शिकार बन जाते हैं। किसी भी अनजान व्यक्ति से फोन करने या किसी भी प्रकार के प्रलोभन से बचें। किसी भी मॉल व दुकान में डेबिट/क्रेडिट कार्ड को स्वाइप करने से पहले मशीन को अवश्य ध्यानपूर्वक देखे कि वह किसी दूसरे डिवाइस से जुड़ा तो नहीं है।

इस प्रकार साइबर खतरों से बचने के लिए जागरुकता एवं सतर्कता ही मात्र उपाय है जिसके द्वारा साइबर अपराध पर कुछ हद तक नियंत्रण लगाया जा सकता है।

गप-शप

श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव
पत्नी – श्री लोकेश चंद्र लाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मिली नाम से ही मिलनसार स्वभाव वाली महिला है। मिलना-जुलना, घंटों बातें करना, सबकी ज़िंदगी की खिड़की खोलकर नज़ारे लेने का आनंद उसकी दिनचर्या को रोमांचित बनाता है। अपने घर के सभी कार्यों को समाप्त कर मोहल्ले की दो चार स्त्रियों के साथ बैठकर किसके घर में कैसी खिचड़ी पक रही है, प्रत्येक घर की खिचड़ी का स्वाद मिली को मालूम है। फिर उस खिचड़ी को मसाले में छौंक कर उसका सिलसिलेवार वर्णन मिली को उसके खत्म होते हुए आत्मविश्वास को जीवित बनाने में मदद करता है।

मिली - स्वाति आजकल दिखाई नहीं देती। क्या बात है....

चाची – हां, शादी-विवाह का माहौल चल रहा है न बेटी, वह अपने मायके गई है। वहां किसी संबंधी की शादी है।

जूही – वाह! चाची स्वाति के तो मज़े ही मज़े हैं, नजदीक मायके रहने का यही लाभ होता है। कुछ फूँक-फाँक हुई नहीं की चल दी मिलने। वैसे चाची आपकी उम्र देखकर पता नहीं लगता कि अभी भी आप घर के सारे काम संभाल लेती हैं।

जूही - अरे मिली, स्वाति रहती है तब भी तो घर के हर छोटे-बड़े कार्य में चाची मदद करती है।

चाची – अरे छोट बचवा के माई ह ना, बेचारी केतना करेगी। तो हम ही थोड़ा हाथ बटा देनी। तू लोग बैठके धूप सेक.... हम जा तानी।

मिली - अरे चाची इतनी जल्दी की क्या बात है?

जूही - मिली जी आपने माचिस की तीली लगा दी और कह रही हैं कि चाची जल्दी क्यों चल दी।

मिली - अरे जूही! मैंने जो कहा वह डंके की चोट पर सच कहा। जब देखो तो स्वाति मायके ही तो रहती है और असली घी तो आपने डाला जी।

जूही - हाँ जी जानती है, स्वाति घर में कुछ भी नहीं करती है। दिन भर या तबीयत खराब का बहाना है या फिर पढ़ाई का।

मिली - हाँ, मैंने भी यह बात सुनी है कि स्वाति के हाथ में तो हर वक्त मेहंदी ही लगी रहती है।

जूही - हम तो 100 टका सच ही कहते हैं। बुरा तो बस सबको पता नहीं क्यों लग जाता है।

(तभी विमला भी उनके खेमे से जुड़ती है।)

विमला - सुना है तुम्हारे घर के सामने बुलू के घर में नए किराएदार आए हैं। नए दंपति नज़र आते हैं। बाल-बच्चे अभी नहीं है।

जूही – सूना क्या, हम तो देखे हैं आदमी शायद सरकारी नौकरी में है।

मिली - और पत्नी?

जूही - पत्नी तो घरेलू ही नज़र आ रही थी। अरे अगर काम करेगी तो हमारे नज़र से बचेगी थोड़ी न। वैसे ट्रक से जब सामान शिफ्ट कर रहे थे तो संपन्न घर के नज़र आ रहे थे। घर में रखने वाली लगभग सभी वस्तुएं कीमती नज़र आ रही थी। आने के साथ ही ए.सी. का कनेक्शन करवा लिया। तब से अब तक खिड़की दरवाजा सब बंद ही रहता है।

मिली – हां, मैं भी कई बार खिड़की पर खड़ी रहती हूँ नज़ारे के लिए। कोई भी दिखाई नहीं देता। पता नहीं कैसे लोग हैं। इतनी गर्मी में शाम के वक्त भी छत पर नहीं आते हैं। मैंने तो अभी तक दोनों पति-पत्नी को देखा तक नहीं है। मैं अगर बाहर की हवा में सांस न लूँ तो घर की चार दिवारी में मेरा दम घुटता है। ऐसा लगता है ज़िंदगी रुक सी गई है। भागदौड़ की दुनिया में मैं एकदम शीथिल हो गई हूँ। कई बार तो लगता है, अकेली ही सही, दुनिया की सैर करने बस निकल पड़ूँ।

जूही - अरे मिली! अकेले कैसे, भैया जी और तितली को अकेला छोड़कर कहीं जा पाओगी। बिट्टू के जन्मदिन में तो एक शाम के लिए आप नहीं रह पाई। भैया जी के लगातार फोन ने आपका वहाँ रहना मुश्किल कर दिया था।

मिली - हाँ ठीक कह रही हैं आप। अगर आप लोगों से बात या मुलाकात न हो तो मेरी ज़िंदगी बिल्कुल बेरंग सी हो जाती है। शादी के बाद जब मैं नई नवेली इस मोहल्ले में आई थी तो आपके भैया जी तो मुझे निहारते नहीं थकते थे। हर वक्त कहते रहते, मिली अगर तुम ना मिलती तो यह प्यार भरी ज़िंदगी मुझे कैसे मिलती! उस समय तो मुझे जीवन में कुछ भी कर गुज़रने का शौक था। कुछ करना चाहती थी, अपने जीवन को नया आयाम देना चाहती थी। नवीन को यह सब पसंद न था। हालांकि सामने से कभी विरोध नहीं किया। जब भी मैं अपने सपनों की बात करती, वह कोई ना कोई बात कह कर टाल देते थे। मेरे ना चाहते हुए भी शादी के कुछ ही महीने के अंदर तितली आ गई और उसके आते ही सचमुच जीवन में एक नया आयाम आया। जीवन भी अच्छा लगने लगा। एक पत्नी से पूर्णता की ओर को प्राप्त हुई। पर इसके अलावा भी अपने जीवन में अपना लक्ष्य हासिल करना चाहती थी पर यह चाहत धीरे-धीरे समाप्त होती गई और पत्नी-मम्मी में जीवन गुजरता जा रहा है। अब मेरे जीवन का अर्थ नवीन और तितली ही हैं।

जूही - अरे बबलू की आने का वक्त हो गया है।

मिली – हाँ, हाँ सबका ही घर पर चलने का वक्त हो गया है वरना घर उठकर आसमान पर चला जाएगा।

सभी ने अपने-अपने घर की ओर प्रस्थान किया। पर आज मिली अपने साथ अपने हृदय में ढेर सारी हलचल लेकर आई थी। किसी भी कार्य को करने में उसका मन नहीं लग रहा था। अनमने मन से ही वह अपने आप को व्यस्त रखने की कोशिश कर रही है।

जूही - अरे मिली, कल आप दिखाई नहीं दी? क्या कर रही थी?

मिली - कुछ नहीं बस जरा मन ठीक नहीं लग रहा था।

जूही – मन, वह भी बाहर आने का!

मिली - अरे यह सब जाने दीजिए। वह घुन है ना जी, जो नए भाड़ेदार आए हैं। दिनभर जो उनका दरवाजा खिड़की बंद रहता था, मैं तो सोचती थी कि क्या करते हैं दिनभर। कहीं बाहर आना-जाना नहीं। अब तक तो मैंने उन्हें देखा ही नहीं था, जब भी छत पर जाती उनके घर को बंद ही पाती थी। कल वह पड़ोसन छत पर आई थी। तितली आंटी... आंटी कहकर बात करने लगी। तो मैंने भी मानवता दिखाकर उसका नाम पूछ लिया। बड़े ही साधारण ढंग से उसने अपना नाम आशा बताया। पर वह एक सुंदर नारी की परिभाषा लग रही थी। आधुनिकता का नामोनिशान तक नहीं था। बातों में ठेठपन झलक रहा था उस पर हावी होते हुए मैंने पूछ ही लिया कि आपका दिन कैसे कटता है? बाहर दिखाई भी नहीं देती हैं। मेरे प्रश्न के उत्तर में सिर्फ एक छोटी मुस्कान दिखाई। सिलसिले को आगे बढ़ते हुए मैंने कहा लगता है दिनभर टीवी देखते हैं। आशा ने कहा, नहीं हमारे घर टीवी नहीं है। मैं सातवें आसमान में पहुंचकर पूछ ही लिया, तो आप घर में दिनभर क्या करती हैं। बड़े ही साधारण पूर्वक उन्होंने जवाब दिया कि मैं और सचेत (उसका पति) दोनों यूपीएससी की तैयारी कर रहे हैं। सचेत का कहना है कि अगर हम दोनों साथ में तैयारी करें तो दोनों की डगर आसान हो जाएगी। ऑफिस से आकर यह और मैं रात भर एक दूसरे को पढ़ते-पढ़ाते रहते हैं। मैंने कहा, अच्छा ही है अभी तक बच्चे नहीं है वरना एक बार उनकी जिम्मेदारी आ जाती है तो अपनी सारी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ सब दबानी पड़नी हैं। एक माँ त्यागशीला होती है। यही परंपरा है। अगर एक स्त्री बच्चे से पहले अपने बारे में सोच ले तो वह कुमाता की संज्ञा में आ जाती है। स्त्री के सफल होने की राह अत्यंत कठिन है और इस डगर पर चलना, अपने सारे कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हुए यह एक अग्निपरीक्षा की तरह हो जाती है और इस परीक्षा में लगभग हर स्त्री को उतरना ही पड़ता है।

फिर आशा ने कहा कि सचेत का कहना है पहले कुछ सफलता अर्जित कर ली जाए फिर आगे परिवार बढ़ाने का भी सोचेंगे। इतनी हिम्मत ही मुझे आगे बढ़ने का हौसला देती है। मुश्किल रास्ते, सही फैसला और आत्मविश्वास से आसान हो जाते हैं। बेहद साधारण सी लगने वाली आशा अपने बातों और विचारों से असाधारण सी प्रतीत हो रही थी। कई बार हम ऊपरी आवरण को ही वास्तविक समझ लेते हैं। जिन्हें हम घुन कह कर संबोधित कर मज़ाक उड़ाते थे, वास्तव में दोनों पति-पत्नी साधना में तल्लीन हैं जिन्हें विलासिता या दिखावे की कोई जरूरत नहीं। यह दोनों पति-पत्नी तो अपने को तराशने में लीन है।

दोनों के इस वार्तालाप ने स्थिति को गंभीर बना दिया। हम जो भी कार्य करते हैं या सोचते हैं, उसका सीधा संबंध हमारे स्वयं के जीवन में घटित घटनाओं के आधार पर होता है। जूही और मिली के अधूरे सपने कोई तीसरा पूरा कर रहा था। जूही आगे पढ़ना चाहती थी और अपने आसपास के अशिक्षित

लोगों को पढ़ाना चाहती थी। अत्यंत गरीबी में पली- बढ़ी जूही शिक्षा के सुंगध को सर्वत्र फैलाना चाहती थी परंतु जल्दी शादी ने उसके सपने को पूरे होने से पहले ही रौंद डाला। ससुराल वालों को पढ़ना – लिखना जैसे शब्दों से कोई विशेष मतलब न था। मिली की जीवन से असंख्य महत्वकांक्षाएँ थी जो अधुरी रह गईं। अब तो उसने अपने आप के बारे में सोचना – समझना ही छोड़ दिया है। अनंत जिम्मेदारियों में जकड़ी मिली अपने सपनों से न मिल पाई। अपने जीवन के अधुरेपन को वह हर चेहरे में झांकती है।

जूही - मिली जी छोड़िए न, क्या लेना देना है। चलिए मैं चलती हूं आज जरा घर पर काम है।

मिली – हाँ, ठीक है पर शायद अगर हमें हमारे जीवन में स्वाद नहीं मिल रहा है तो दूसरों के जीवन के स्वाद को बेस्वाद करने का अधिकार प्राप्त नहीं हो जाता।

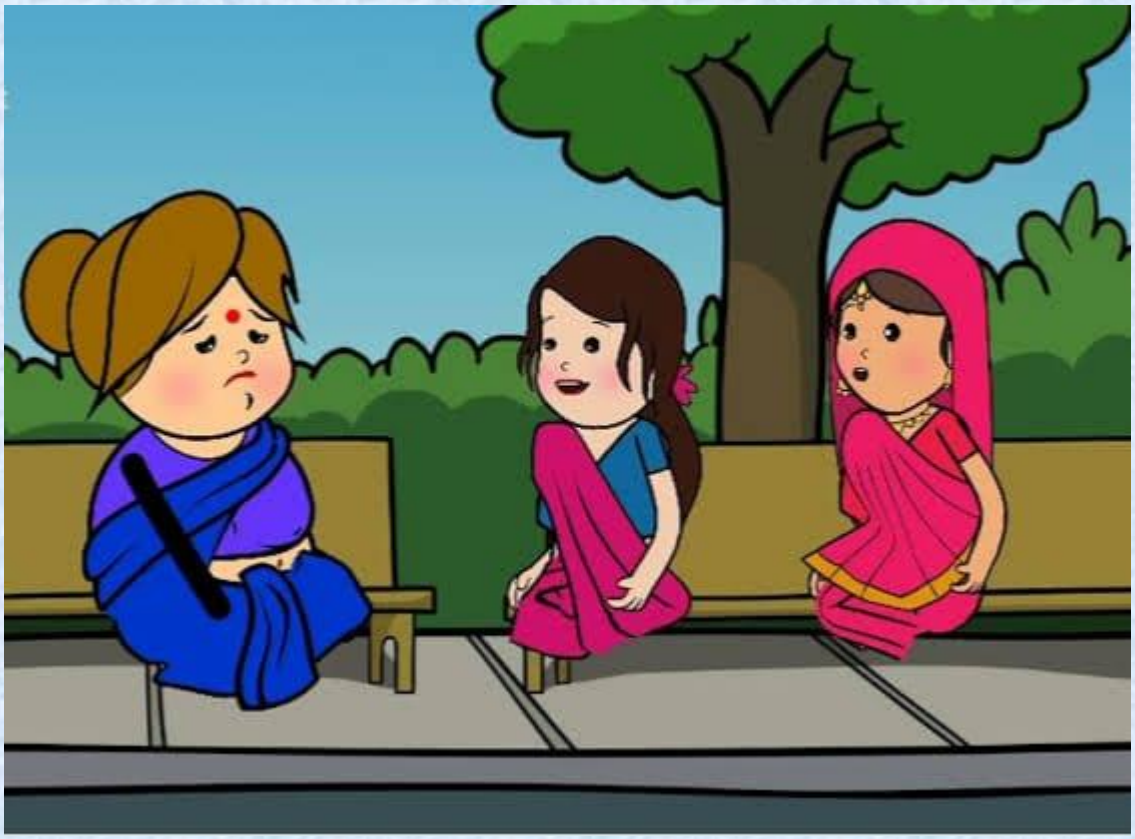

डिप्रेशन के 3 महीने और संगत का असर

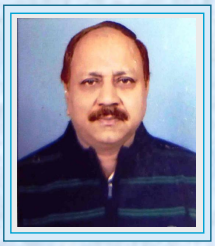

श्री सतीश राय
वरिष्ठ लेखाकार

भारत एक धार्मिक देश है यहां लोगों के अंदर संस्कार संस्कृति कूट-कूट कर भरी है यहां के ग्रन्थों में गुरुकुल का उल्लेख मिलता है l यहाँ की पुण्य भूमि पर गुरु- शिष्य संबंध की पवित्रता और निस्वार्थ प्रेम के अनेको उदाहरण हैं l धर्म शास्त्रों के अनुसार व्यक्ति जैसा कार्य करता है उसे फल भी उसी के अनुरूप मिलता है। तभी तो यहां के गुरुकुल में संस्कार , प्राकृतिक रूप से रहना, आहार-विचार और उपचार से संबंधित समस्त जानकारी प्राप्त होती थी जिससे व्यक्ति मजबूत बने और स्वस्थ जीवन जी सके। स्वस्थ रहने के लिए परिवार और संगत अर्थात किन लोगों के साथ आप उठते बैठते हैं, का भी जीवन में बहुत महत्व है। इसी से संबंधित मकरध्वज की कहानी मेरी स्मृति में आ रही है जिसे मैं आपके समक्ष रख रहा हूं।

मकरध्वज अपने बेटे से बहुत परेशान था। उनका बेटा श्याम अक्सर अपने घर में लड़ाई झगड़ा करता रहता था और अब बाहर से भी झगड़ा करने की शिकायत आने लगी। मकरध्वज को पता था कि उसके बेटे की संगत गलत लोगों के साथ हो गई है। वे हमेशा अपने बेटे को समझाते थे जिसका उस पर कोई असर नहीं होता। वे हमेशा अपने बेटे को लेकर परेशान रहते थे। एक दिन पता चला कि उनका बेटा किसी झगड़े में बुरी तरह घायल, घर से थोड़ी दूरी पर बेसुध पड़ा है l वह भाग कर घटनास्थल पर पहुंचे और उसे अस्पताल में भर्ती कराया l उपचार करने में मकरध्वज का बहुत पैसा खर्च हुआ तब कहीं श्याम की जान बच पाई l जब थोड़ा ठीक हुआ तो उसे घर लाये और उसके पास बैठकर उसे समझाया कि जिन लोगों के लिए तुमने झगड़ा किया वह सभी तुम्हें घायल छोड़कर भाग गए, तुम्हें अच्छे लोगों के साथ रहना चाहिए l जीवन में आगे बढ़ने के लिये संगत का बहुत बड़ा असर होता है l रामायण में माता कैकेयी भगवान राम को बचपन में बहुत प्यार करती थी, अपने बेटे भरत से ज्यादा राम को मानती थी। उसकी दासी मंथरा हमेशा साथ रहकर सिर्फ लोगों की बुराई करती थी। यह कैकेयी के कान भरने का असर ही था कि राम को सबसे ज्यादा प्यार करने वाली माता कैकेई ने राम को 14 वर्ष के लिए वन में भेज दिया जो राजा दशरथ के अवसाद का कारण बना। इसके परिणाम स्वरुप यही दुःख उनके पति राजा दशरथ के मृत्यु का कारण भी बना l

इसी से संबंधित एक दूसरी कहानी भी बताता हूं ध्यान से पढ़ना l मुन्ना का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था l मुन्ना की माताजी बहुत धार्मिक थी। परिवार में अच्छे संस्कार के कारण मुन्ना का मन भी पूजा

पाठ में लगता। उसे जब भी समय मिलता वह धार्मिक कार्यों में लग जाता l मुन्ना ऐसे लोगों के साथ उठने बैठने लगा जो व्यापार करते थे, उसका मन भी व्यापार करने को हुआ। संगत के असर के कारण वह भी व्यापार करने लगा लेकिन अनुभव न होने से उसे घाटा हुआ l मुन्ना ने अपना मन अपनी शिक्षा पूरी करने पर लगाया तभी उसकी मित्रता संजय से हुई जो नौकरी के लिए कंपटीशन की तैयारी कर रहा था l मुन्ना पर भी संगत का असर हुआ, वह भी कंपटीशन की तैयारी खूब मेहनत से करने लगा और उसमें उसे सफलता भी मिली l धार्मिक नगरी में सरकारी नौकरी लग गई। धार्मिक रुचि के कारण दिन में नौकरी करता और रात में पूजा-पाठ, ध्यान लगाता। इसी बीच मुन्ना के जीवन में एक गुरु जी आए जिनके सानिध्य में उसे ईश्वर के ज्ञान का बोध हुआ। गुरु जी के आशीर्वाद से वह लोगों के दु:खों को दूर करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता। इसमें लोगों को लाभ मिलता, वह लोगों को मोटिवेशन के माध्यम से बीमारी दूर करने में मदद भी करता था l मुन्ना पूरी निष्ठा एवं लगन से दिन में नौकरी करता और सुबह-शाम ईश्वर में ध्यान लगाता l मुन्ना का यह नियम बन गया था कि रोज कार्यालय जाने पर सबसे पहले वहां स्थित हनुमान मंदिर में जाकर भगवान राम सहित सभी देवताओं का आशीर्वाद लेता इसके पश्चात अपना कार्य शुरू करता। इस तरह 55 वर्ष कब बीत गया उसे पता ही नहीं चला l कार्यालय में कुछ लोग ऐसे थे जो मुन्ना से ईर्ष्या करते थे उन लोगों को जब भी मौका मिलता उच्च अधिकारियों से उसकी शिकायत करते, अब मंदिर जाकर दर्शन करने पर भी टोका जाने लगा। वह इससे विचलित नहीं हुआ तो उसे जरूरत से ज्यादा काम दिया गया l मुन्ना कार्यालय जल्दी आकर मंदिर में दर्शन कर अपने कार्य में लग जाता और कार्यालय समय खत्म होने के बाद तक, जब सब लोग चले जाते तब भी देर तक वह अपना कार्य करता ताकि काम पूरा हो जाए और कार्य के प्रति किसी को कोई शिकायत ना रहे l उन लोगों द्वारा अब उससे असभ्य भाषा का प्रयोग भी किया जाने लगा। इसके अतिरिक्त उसके कार्य मे छोटी -मोटी कमियां निकाल लिखकर पूछा जाने लगा l सताने का रोज कोई न कोई बहाना ढूंढ कर उच्च अधिकारियों से शिकायत की जाती रही l ज्यादा परेशान करने के लिए उसका वेतन रोक दिया गया l मुन्ना के जीवन में इससे पहले भी एक से बढ़कर एक घटनाएं घटी थीं लेकिन वेतन उसका कभी भी नहीं रोका गया था l यह घटना उसके लिए बिल्कुल नई थी l आर्थिक रूप से कमजोर करने वाली घटना उसे अंदर तक तोड़ गई l परिवार के खर्चे की समस्या, समाज सेवा पर होने वाला खर्च का रुकना l जिस समय वेतन रोका गया उस समय बड़े-बड़े त्यौहार करीब थे जिस पर बच्चों एवं परिवार की ज़रूरतें ज्यादा थी एक-एक सभी तरह के खर्चे बंद हो गए l वेतन का 10 प्रतिशत जो समाज सेवा पर खर्च होता था वह भी रुक गया l एकाध महीना तो किसी तरह चल गया लेकिन आगे भी वेतन न मिलने से मुन्ना का पूरा परिवार आर्थिक तंगी में रहने लगा। छोटी-छोटी आवश्यक ज़रूरतें भी बंद करनी पड़ी l इसी सब की वजह से मुन्ना के मन में इन तीन महीनों में निगेटिव विचारों ने घर कर लिया l उसके मन में हर समय बुरे-बुरे विचार आते थे। यही समय था जिसमें परिवार, अच्छे लोगों एवं अच्छे मित्रों की जरूरत होती है l जिन लोगों के साथ मुन्ना हमेशा उठता-बैठता था उन लोगों ने भी उससे किनारा कर लिया, रोज मिलने-जुलने वाले उससे दूर हो गए। इसी समय उसके जीवन में तीन ऐसे लोग आए जिन्होंने मोटिवेट कर बीमारी दूर करने में मदद की, उन लोगों ने हिम्मत और हौसला बढ़ाकर पॉजिटिव बना दिया l मुन्ना के मन से निगेटिव विचार निकल गए,

डिप्रेशन में 3 महीने रहने के कारण जो निगेटिव विचार मन में आ रहे थे वह सब पॉजिटिव विचारों में धीरे धीरे बदल गए l डिप्रेशन बहुत बड़ी बीमारी है। इस बीमारी से निकलने में परिवार एवं मित्रों का महत्वपूर्ण रोल होता है, संगत का भी जीवन पर बहुत बड़ा असर होता है l पूर्व से ही यह कहावत बहुत प्रचलित है कि हमेशा अच्छे लोगो की संगत करनी चाहिए l .. इस कहानी ने श्याम के मन पर बहुत असर किया। उसने समझ लिया कि व्यक्ति का सबसे बड़ा मित्र उसका अपना अनुभव होता है l उसने कसम खाई कि आगे से हमेशा अच्छी सोच वाले लोगों के साथ ही रहेगा।

कमर तोड़ बुढ़ापा - एक कड़वा सच

सुश्री आकृति कुशवाहा
पुत्री- श्री अनूप कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग के अनुसार, भारत की जनसंख्या में वृद्धजनों की हिस्सेदारी वर्ष 2011 में लगभग 9 प्रतिशत थी जो वर्ष 2036 तक 18 प्रतिशत तक पहुँच सकती है।

चित्ते प्रसन्ने भुवनं प्रसन्नं चित्ते विषण्णे भुवनं विषण्णम्।
अतोऽभिलाषो यदि ते सुखे स्यात् चित्तप्रसादे प्रथमं यतस्व ॥

बुढ़ापा एक ऐसी सच्चाई है जिसका सामना हर व्यक्ति को करना पड़ता है। इस कड़वी सच्चाई को झुठलाया नहीं जा सकता कि अंततः हर मनुष्य, नर हो या नारी, बूढ़ा होता है। जीवन रुपी यात्रा का आखिरी स्टेशन है बुढ़ापा। एक किशोर की इच्छा होती है कि वो जल्दी से जवान हो जाए। और समय बीतने पर जब जवान हो जाता है तो जवानी के उस दौर में फिर कभी उसके दिलोदिमाग में ये बात आती ही नहीं है कि एक दिन ये जवानी भी नमस्ते कर जाएगी। फिर जब जवानी के दरवाजे पर बुढ़ापे की दस्तक पड़ती है, तो उसे सहज रूप से स्वीकार न करके उल्टा उसे छिपाने की कोशिश करने लगते हैं।

शुरुआत सिर पर सफेद हो रहे बालों से होती है। सफेद बालों को ढूंढ-ढूंढ कर उखाड़ा जाता है। आधे से ज़्यादा बाल जब शहीद हो जाते हैं तब सहारा होता है मेंहदी या बाजार में मिलने वाली हेयर डाई का लेकिन बुढ़ापा फिर भी नहीं रुकता।

"कोढ़ में खाज" का काम करती है जवानी के दिनों में की गई लापरवाहियां। अनियमित खानपान, तरह तरह के व्यसन, मस्तिष्क में दुनिया भर का तनाव। जिनके परिणाम स्वरूप शरीर कई प्रकार की गंभीर बीमारियों का घर भी बन जाता है। अकसर कई लोगों को आपने भी देखा ही होगा जो दावतों में भी दाल रोटी ही खाते हैं, पीने को गुनगुना पानी मांगते है। वजह, शुगर की बीमारी, कमज़ोर दिल, उच्च या निम्न रक्तचाप आदि।

हालांकि बुढ़ापा आने से कोई नहीं रोक सकता फिर भी अगर हम अपनी किशोरावस्था और यौवनावस्था से ही अपना ध्यान रखें तो इसे एक लंबे समय तक रोका जा सकता है और भविष्य में इसके दुष्परिणामों से बचा जा सकता है।

मजे की बात तो ये है कि इसमें आपको दमड़ी भी खर्च करने की जरूरत नहीं है, उल्टा अगर हम शुरू से ही थोड़ा ध्यान रखें तो भविष्य में होने वाले मेहनत की कमाई को फिजूल खर्च होने से बचाया जा सकता है।

रोज सुबह जल्दी उठ कर सैर करने की आदत डालें। जितना संभव हो व्यायाम करें। 'योग भगाए रोग' अर्थात योग को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। शुद्ध और पौष्टिक खाना खाएं और उतना ही खाएं जितना इस काया को जरूरत है। चबा-चबा कर खाएं, दबा-दबा कर नहीं।

प्रकृति ने हमें कितनी तरह की स्वास्थ्यवर्धक वस्तुएं उपहार स्वरूप दे रखी हैं। उनके गुणों को पहचाने और उन्हें अपने खानपान में शामिल करें।

वैसे तो आजकल "फास्ट फूड" का चलन ज्यादा हो गया है और आसानी से हर जगह उपलब्ध भी तो है। स्वाद के लिए कभी कभार फास्ट फूड खा लेना ठीक है लेकिन इसे आदत न बनने दें।

बाहर के खाने से तो अपने आप को जहाँ तक हो सके बचाना ही है, इसके अलावा किसी भी तरह के तनाव या चिंता से भी दूर रहने का प्रयास करें। याद रखें की चिंता एक ऐसी चीज है जो अकसर करने से ही होती है। चिंता किसी भी समस्या का समाधान नहीं है बल्कि यह तो अपने साथ दूसरी और कई तरह की समस्यांए ले आती है। ईससे बचने के लिए मनोबल बढ़ाने वाली पुस्तकें पढ़ें। प्रार्थना में अपना ध्यान लगाएं।

संसार जीवन की सच्चाई है, और जीवन चक्र का रूप है कि एक शिशु जन्म लेता है बालपन से किशोर और किशोरावस्था से यौवन में कदम रखता है। यौवन ढलने के बाद जो अवस्था आती है वो है बुढ़ापा। अफसोस....., बुढ़ापे के बाद मानव जीवन में और कोई अवस्था नहीं आती। इस अवस्था के बाद तो आत्मा भी इस जर्जर शरीर को जल्द से जल्द छोड़ कर नए चोले की तलाश शुरू कर देती है।

सो आज से ही बल्कि अभी से बढ़ती उम्र के होने वाले प्रभावों को नियंत्रित करने का प्रयास शुरु कर दीजिए और कुछ ऐसा कीजिए कि बुढ़ापा भी एक स्वस्थ एवं मजबूत बुढ़ापा बन जाए। एक न एक दिन इसे आना तो है ही परंतु जब तक ना आए कहते रहें, "अभी तो मैं जवान हूँ।"

यह लेख एक काल्पनिक गतिविधियों से निर्मित है-

प्रत्येक व्यक्ति की दादी माँ की तरह, मेरी दादी माँ भी एक वृद्ध महिला थीं। वह बीस वर्षों से वैसे ही वृद्ध एवं झुर्रियां पड़ी हुई दिखाई देती थीं जैसे कि मैं उन्हें जानती थीं। लोग कहा करते थे कि युवावस्था में वह बहुत सुंदर थी लेकिन यह सब कुछ विश्वास करना मुश्किल ही था। मेरे दादा जी का रुप-चित्र बैठक में चिमनी वाली अँगीठी पर बनी ताक के ऊपर लटका हुआ था।

वह एक बड़ा-सा साफा तथा ढीले-ढाले वस्त्र पहने हुए थे। उनकी लम्बी सफेद दादी उनके वक्ष-स्थल के काफी हिस्से को घेरे हुई थी और वह कम से कम एक सौ वर्ष की आयु के दिखाई देते थे। वह ऐसे दिखाई देते थे

मानो कि उनके बहुत पोते तथा पोतियाँ हो सकती है। जहाँ तक मेरी दादी माँ का सवाल है उनके युवा तथा सुन्दर होने का विचार ही एक बहुत बड़ी हलचल पैदा करने वाला था। वह हमेशा छोटी सी-मोटी सी तथा झुकी हुई थीं। उनका चेहरा सभी तरफ से झुर्रियों की डिजायनर लकीरों से भरा हुआ था। वृद्ध, इतनी ज़्यादा वृद्ध कि वह उससे अधिक वृद्ध नहीं हो सकती थीं और पिछले बीस वर्षों से उसी उम्र पर ठहरी हुई थी।

वह बिलकुल सफेद कपड़े पहने हुए, अपना एक हाथ अपने झुकते शरीर को संभालते हुए कमर पर रखे हुए तथा दूसरे हाथ में पूजा की माला फेरते हुए, घर में इधर-उधर लंगड़ाते हुए चलती-फिरती रहती थी। वह पर्वतों के बीच सर्द मौसम की एक प्राकृतिक तरवीर के समान थीं। शुद्ध सफेद, पवित्र, शान्ति का एक विस्तार जो सदैव शान्ति तथा सन्तोष की सांस लेती रहती थी।

मेरी दादी और मैं बहुत अच्छे मित्र थे। मेरे माता-पिता किसी काम से शहर में रहने के लिए चले गए थे, गाँव में मैं और मेरी दादी रहते थे। वह मुझे सुबह उठा देती थी स्कूल जाने के लिए। वह एक उबाऊ सा गाना गाती थीं इस आशा से कि मैं भी उसको याद करूंगी लेकिन मैं वह गाना सिर्फ इसलिए सुनती थी क्योंकि मुझे उनकी आवाज बहुत प्यारी लगती थी। वह मेरे लिए स्लेट, पेन, दवात एक रस्सी में बाँध कर दे देती थी। और मेरे साथ खुद भी तैयार होकर हाथ में बासी रोटियाँ लेकर मेरे साथ जाती थी, स्कूल से सट कर ही एक मंदिर था, वह वहीं पर बैठी रहती थी और साथ में वापस आती।

जब मेरे माता-पिता पूरी तरह शहर में बस गए तब उन्होने हमें भी शहर बुला लिया। अब, दादी माँ मेरे साथ मेरे स्कूल नहीं जाती थी, एक मोटर बस आती थी मैने उससे जाना शुरू कर दिया था। कुछ वर्ष बीत गए, हम पहले की अपेक्षा कम मिलते थे, अब स्कूलों में अँग्रेजी पढ़ाया करते थे वह मुझे अब मेरे पाठ में मदद नहीं कर पाती थी और उन्हें बुरा लगता था कि हमें ग्रन्थों की शिक्षा नहीं दी जा रही है। एक दिन मैंने स्पष्ट कह दिया कि हमें संगीत की शिक्षा दी जा रही है। दादी माँ के लिए संगीत का संबन्ध दुष्टता व कामुकता में था जो कि केवल वेश्याओं एवं भिखारियों का ही एकाधिकार है यह भद्रजन समूह के मतलब का नहीं है। तब तो दादी माँ ने कुछ कहा नहीं लेकिन उनकी चुप्पी अस्वीकृति की थी। इसके बाद वह मुझसे बहुत कम बात करती थी। कुछ सालों बाद मुझे विदेश जाना पड़ा आगे की पढ़ाई के लिए। स्टेशन पर मुझे दादी माँ भी विदा करने आई वह मेरे गले लगी, उन्होने कुछ बोला नहीं पर गले लगा लिया, उस वक्त मुझे ऐसा लगा कि मैं उन्हें आखिरी बार देख रही हूँ।

पाँच साल बाद जब मैं विदेश से लौटी तब दादी माँ को देखकर मुझे जितनी खुशी हुई उतनी मानो पूरी जिन्दगी में कभी न हुई हो। उनकी दिनचर्या में से वह आधे घन्टे चिड़ियों को दाना डालती थी। मेरे आने के कुछ दिनों बाद ही उन्होंने एक दिन पूरे मोहल्ले को इकट्ठा करके देशभक्ति गीत जोर-जोर से गाना शुरु कर दिया। हमने रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन उन्होंने एक न सुनी। अगले ही दिन वह बीमार पड़ पड़ गई, हमने डॉक्टर को बुलाया, पता चला कि मामूली सा बुखार है। मगर मेरी दादी माँ को पता चल चुका था कि वो

आखिरी साँसे ले रही हैं। उस अंतिम वक्त में उन्होंने ज्यादा समय न गवाँ कर सिर्फ अपने भगवान को याद किया और माला जपा। कुछ देर बाद उनकी साँसे थम गई, शरीर ठंडा पड़ गया। हमने उनकी अर्थी उठाकर घर के बाहर रखी और देखते ही देखते लगभग सौ से ज्यादा चिड़िया उनके आस-पास आकर बैठ गई जैसे वह श्रद्धांजलि देने आई हो। मेरी माँ ने उन्हें दाना डाला लेकिन उन सब ने दाना चुगना तो दूर उसको देखा भी नहीं। हम जब दादी माँ का शव लेकर चल दिए तो वे चुपचाप बिना चहचहाए उड़ कर चली गई।

इन सब के बाद मानो ऐसा लगा कि दादी माँ मेरा ही इंतजार कर रही हो और चिड़ियों का यूँ आना और चुपचाप चले जाना उनको श्रद्धांजलि देने जैसा प्रतीत हुआ।

पद्य संगम

रिश्तों की डोर

श्रीमती स्मृति श्रीवास्तव
वरिष्ठ लेखाधिकारी

उलझे जो कभी तो मिल के सुलझा लेना

रिश्ते की एक डोर तेरे हाथ भी है एक मेरे हाथ भी,

बचपन की अठखेलियों में टूटे जो काँच है

कुछ तेरे हाथ भी, कुछ मेरे हाथ भी। उलझे जो ----------

वो गुड्डे गुड़ियों और गेंद तड़ी का खेलना,

कभी हार - जीत पर लड़ना और झगड़ना

इन हाथापाइयों में लगी जो चोट, उनके निशान आज भी है

कुछ तेरे माथ भी, कुछ मेरे माथ भी। उलझे जो --------

माँ के बनाए पकवानों को वो मिलकर चुराना

कुछ खाना, कुछ गिराना, पकड़े जाने पर मासूम बहाने बनाना,

फिर मिलकर माँ की डांट खाना, उन झिड़कियों की खनक आज भी है

कुछ तेरे कान भी, कुछ मेरे कान भी। उलझे जो --------

शाम को वो पापा के डर से पढ़ने बैठना

पाठ न याद होने पर हज़ार बहाने बनाना

घुमा- घुमा कर जवाबों में पापा को उलझाना, उन उलझनों के,

तार आज भी हैं, कुछ तेरे पास भी कुछ मेरे पास भी। उलझे जो ----

माना कि वह वक्त लौट कर ना आएगा

वो हसना-हंसाना, वो रूठना मानना

माँ पिता के प्यार की ठंडी छाँव पाना

मगर इसे पहले की सासों की डोर छूट जाये

तेरे मेरे अहं की जड़े और गहराये

तुम मेरे पास आना और मन की गाँठे खोल जाना

कुछ कदम तुम बढ़ाना, कुछ मुझे भी समझाना। उलझे जो --------

जननी, जी करता है

श्री चंचल कुमार तिवारी
सहायक लेखाधिकारी

जननी, जी करता है,
काश ! कहीं तू मिल जाए,
फिर से तुझे गले लगाउँ,
माँ कह तुमको बुलाउँ,
आंचल में तेरे छिप जाउँ,

बहुत दिन हुए, हाल बताए,
काश ! पूछो, तुम्हें बताउँ,

अब तक क्या बीती,
कैसे तुझे बताउँ
पास अगर तू होती,
क्षण में मनोभाव मेरे समझ लेती,

यू समझो, तुमसा अब कोई नहीं,
जिसे मैं दिल की बात सुनाउँ,
थक गया हूं, शायद मैं,
जीवन पथ पर, आगे पग कैसे बढ़ाउँ,

तेरे बिन यह जीवन अधूरा है,
मेरे मन का आँगन सूना है,

याद आती तो तुम अक्सर रातों में

अब नींद नहीं आती मुझको रातों में,

पल साथ के बीते, याद आते हैं,

सपने अधूरे बहुत रुलाते है,

कास माँ तू मेरे पास होती,

जिंदगी से मुझे कोई शिकायत न होती।।

घोंसला

सुश्री राखी कुमारी
लेखाकार

कुछ वक्त पहले कैसे
मैं अंडे में सिमटा था
माँ के स्नेह और दुलार में
आसमां की गोद में जन्मा था

कमजोर और डरा हुआ
छोटा सा बिना पंखों के था
माँ की कोमल छाया में
थोड़ा साहस इन आँखों में था

देखता था उनको
कैसे वो आसमां में उड़ती थी
खुद भले भूखी रह जाए
पर मेरा पेट भरती थी

धीरे धीरे पर निकले
मेरी उड़ने की चाह जगी
खुले आसमान को नापने की
मेरे मन में आस जगी

जाके पूछा माँ से
क्या मैं अब उड़ने को तैयार हूँ?

अपनी रक्षा खुद कर सकू
इतना तो अब होशियार हूँ

मुस्कुराते हुए वो बोली
मैंने कब कहा तू होशियार नही
पर तू सोचता है जितना
ये आसमां उतना भी खुशगंवार नही

तुम संयम और हिम्मत रखना
खुले आसमां में बड़ी मुसीबतें आएँगी
अब तक थे तुम घोंसले में सलामत
अब खुद को सँभालने की ज़िम्मेदारी आएगी

कहा मैंने माँ से
तुम्हारी सारी बातें याद रखूँगा
भरोसा रखो मुझपे
अपना ध्यान मैं खूब रखूँगा

फैलाये अपने पंख मैंने
अनंत आसमान को छूने को
नम आँखों से माँ ने कहा
बस भूल न जाना मुझको

खुशी हुई मुझे इतनी कि
सारा डर मैं भूल गया
ग़म बस इस बात का रहा कि
मेरा घोंसला मुझसे छूट गया।

वो औरत है

श्री शिवम कुमार
लेखाकार

वो औरत है कुछ भी कर सकती है।
पत्थर की दीवारों को भी घर कर सकती है।
उसकी गोद में खेले हैं राम और कृष्ण
वो दशरथ को भी बेबस कर सकती है।
बंजर को भी हरा भरा कर सकती है।
भ्राता वो कर्म की देवी है।
सूने घर में भी किलकारी भर सकती है
बड़ी शिद्दत से करती है वफाएं वो
तुम एक उम्मीद पर खरे उतरे,
तो वो तुम्हारी हर उम्मीद को पूरा कर सकती है
वो औरत है कुछ भी कर सकती है।
पत्थर की दीवारों को भी घर कर सकती है।
बन जाय अगर जो अंसुइया,
तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी पालने में कर सकती है।
अगर रूप हो सावित्री का,
तो यम से भी लड़ सकती है।
वो नारी है कुछ भी कर सकती है।
जब जब देश में संकट आया
विकराल रूप दिखलाया है।
कभी लक्ष्मी, दुर्गा ,कभी इंद्रा के रूप में अपना साहस दिखलाया है।
नारी से नर है, नारी से ही नारायण हैं।
बिना नारी के ये दुनिया अपूर्ण है।
नारी के कोख में सारा संसार सम्पूर्ण है।

मेरा भारत है महान

श्री अनुराग निषाद
पुत्र- श्री अनिल कुमार
लेखाकार

जन्मभूमि मेरा भारत
कर्मभूमि मेरा भारत
मातृभूमि मेरा भारत
तेरे चरणों में शीश नवाऊँ
जय भारत, जय भारत।।

वीरों ने लिया जहाँ जन्म
नहीं है किसी स्वर्ग से कम
निवास करते हैं जहाँ हम
उन्हें करते हैं प्रणाम हम।।

भारत की मृदा मेरे लिए तिलक समान
उसका नीर मेरे लिए अमृत समान
भारत का गौरव बढ़ाना मेरा कार्य
उसके लिए शहीद होना पुण्य का कार्य।।

स्वर्ग से विशाल मेरा भारत
जननी जन्मभूमि मेरा भारत
भारतीयों ने बढ़ाई इसकी शान
इसलिए मेरा भारत है महान।।

नई शिक्षा नीति 2020

सुश्री नाज़िया कादिर
लेखाकार

मिशन शुरू किया गया

पार हम लगाएंगे।

इस NEP से शिक्षा को

ऊँचाइयों पर ले जाएँगे,

कठिन डगर है, नया सफर है।

क्योंकि यह शुरुआत है क्योंकि यह शुरुआत है।

नए व्यवसायिक और तकनीक के साथ बच्चे शिक्षा पाएंगे।

अपनी कला, संस्कृति, भाषा, मूल्यों पर फिर वापस आएँगे।

हम NEP 2020 को ऊँचाइयों पर ले जाएंगे।

हर वर्ग के लिए आसान राह बनाया,

दिव्यांगों और ट्रांसजेंडर के लिए नया अवसर आया।

बस्ते का बोझ हुआ हल्का,

रचनात्मक, कल्पनात्मक और विश्लेषणात्मक के साथ

नई शिक्षा को अपनाएंगे।

हम NEP 2020 को ऊँचाइयों पर लाएंगे।

5+3+3+4 की इस शैक्षणिक संरचनात्मक से शिक्षा आगे बढ़ाएंगे।।

समानुभूति और सहानुभूति के भ्रम ने हटाँएगे,

हम NEP 2020 को ऊँचाइयों पर ले जाएंगे।

राजभाषा नियम, 1976

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976
(यथा संशोधित, 1987, 2007 तथा 2011)

सा.का.नि. 1052 --राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थातः-

1. **संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ--**

   a. इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 है।

   b. इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है।

   c. ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. **परिभाषाएं-- इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो:-**

   a. 'अधिनियम' से राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) अभिप्रेत है;

   b. 'केन्द्रीय सरकार के कार्यालय' के अन्तर्गत निम्नलिखित भी है, अर्थातः-

   c. केन्द्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालय;

   d. केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय; और

   e. केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कम्पनी का कोई कार्यालय;

   f. 'कर्मचारी' से केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;

   g. 'अधिसूचित कार्यालय' से नियम 10 के उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय, अभिप्रेत है;

   h. 'हिन्दी में प्रवीणता' से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है ;

i. 'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

j. 'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

k. 'क्षेत्र ग' से खंड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

l. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान' से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है।

3. **राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि-**

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिन्दी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से--

a. क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिन्दी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगाः परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे ;

b. क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

3. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो)या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

4. उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र 'ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क'या'ख'में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं। परन्तु हिन्दी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि-

a. केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

b. केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर अवधारित करे;

c. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं, पत्रादि हिन्दी में होंगे;

d. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या 'ग'में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

   परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे;

e. क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

   परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

परन्तु जहां ऐसे पत्रादि--

i. क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित हैं वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा;
ii. क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा;

परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी।

iii.

हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर--

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे।

हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

आवेदन, अभ्यावेदन आदि-

1. कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।

2. जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा।
3. यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना,जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिन्दी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना -

1. कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

2. केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

3. यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।

4. उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा,जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा।

हिन्दी में प्रवीणता-

यदि किसी कर्मचारी ने-

a. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है;या
b. स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या
c. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-

1. a. यदि किसी कर्मचारी ने-

    i. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

ii. केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीकाा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है;या

iii. केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

b. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

2. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

3. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।
4. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

11. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

12. **अनुपालन का उत्तरदायित्व-**

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह--

ii. यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है;और

iii. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।

2. केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

लेखा संगम

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठ

Dedicated to Truth in Public Interest